राज्य विद्यालय नेतृत्व केन्द्र

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

छत्तीसगढ़ रायपुर

विद्यालय प्रमुखों द्वारा किये गए विद्यालय आधारित गतिविधियों का दस्तावेजीकरण

'राष्ट्रीय विद्यालय नेतृत्व केन्द्र'

राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन विश्वविद्यालय

नई दिल्ली

संरक्षक

श्री डी. राहुल वेंकट

(भा.प्र.से.)

संचालक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, छत्तीसगढ़

मार्गदर्शन

डॉ. योगेश शिवहरे

अतिरिक्त संचालक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, छत्तीसगढ़

सह मार्गदर्शन

श्रीमती पुष्पा किसपोट्टा

उप संचालक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, छत्तीसगढ़

समन्वय

श्री डी. दर्शन

राज्य समन्वयक

राज्य विद्यालय नेतृत्व केन्द्र

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, छत्तीसगढ़

दिशा-निर्देशन

डॉ. चारु मलिक

राष्ट्रीय विद्यालय नेतृत्व केन्द्र, नई दिल्ली

तकनीकी सहयोग

श्री एम.जी. रात्रे

राज्य विद्यालय नेतृत्व केन्द्र, रायपुर

तकनीकी सहयोग

श्री सुनील सायतोड़े

राज्य विद्यालय नेतृत्व केन्द्र, रायपुर

अनुक्रमणिका

क्र.	शाला का नाम	विद्यालय प्रमुख का नाम	पृ. क्र.
1.	शासकीय प्राथमिक शाला बनचरौदा आरंग, जिला-रायपुर (छ.ग.)	श्री दीपक कुमार दुबे	1-6
2.	महारानी लक्ष्मी बाई शासकीय आदर्श कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय राजनांदगांव (छ.ग.)	डॉ. श्रीमती कृष्णा अग्रवाल	7-12
3.	शासकीय प्राथमिक शाला पिपराही (छ.ग.)	श्रीमती मोहिनी गोस्वामी	13-16
4.	शासकीय उच्चतर माध्यमिक शाला गोकुलपुर वार्ड, धमतरी जिला-धमतरी (छ.ग)	श्रीमती शैलजा पाण्डेय	17-19
5.	शासकीय प्राथमिक शाला लवनबंद जिला बलौदाबाजार (छ.ग.)	श्रीमती टिकेश्वरी पटेल	20-35
6.	Swami Atmanand Govt. Shivlal Rathi S.O.E (Eng.) Bemetara (C.G.)	Mrs. Sudesha Chatterjee	36-39
7.	Swami Atmanand Government Excellence English Medium School Balaji Nagar, Khursipar Bhilai (C.G.)	Mr. Saurabh Sharma	40-42
8.	Sarweshwar Das N P N School Of Excellence Rajnandgaon (C.G.)	Ms. Asha Menan	43-45
9.	Swami Atmananda Govt. English School, Tarbahar, Bilaspur, (C.G.)	Mrs. Usha Chandra	46-54
10.	Swami Vivekananda Government Excellent English Medium School, Jagdalpur (C.G.)	Mrs. Manisha Khatri	55-58
11.	Swami Atmanand Government English School (Sages) Raigarh (C.G.)	Mrs. Vandana Rohilla	59-63

शासकीय प्राथमिक शाला बनचरौदा आरंग, जिला-रायपुर(छ.ग.)

प्रधानपाठक - श्री दीपक कुमार दुबे

ईमेल- deepakdubey56044@gmail.com, मो.नं.-9826956044

विद्यालय की सामाजिक सांस्कृतिक गतिविधियाँ प्रस्तावना :- सामाजिक सांस्कृतिक गतिविधियाँ वह गतिविधियाँ है जिसमें समाज की संस्कृति प्रदर्शित हो। शाला में पढ़ने वाले बच्चे समाज का वह अभिन्न अंग है जिससे भावी समाज के निर्माण में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शालेय अध्यापन में छात्र-छात्राओं को अपनी समृद्ध संस्कृति का ज्ञान आवश्यक है ताकि वह समाज को सुसंस्कृत बना सके। हमारी शाला इस दिशा में सकारात्मक कदम उठाते जा रही है। बच्चों के माध्यम से समाज उत्थान हेतु हम विभिन्न आयोजन करते आ रहे है। हमने बालक और पालक दोनों को जोड़कर समाज में विकृत होती संस्कृति को बचाने का पूरा प्रयास किया है। अनुशासन, आदर सम्मान, उत्सव, सौहार्द्र प्रेम और भाईचारा हमारी अमूल्य संस्कृति है। हमें इसे बचाने के लिए शालेय आयोजनों में ग्रामवासियों को जोड़ना एवं हमारी प्राचीन सामाजिक संस्कृति से छात्र-छात्राओं को अवगत कराना हमारा उद्देश्य रहा है। समय-समय पर गेट-टू-गेदर, शोसल गेदरिंग, वृक्षारोपण लोकनृत्य एवं गीत जैसे कार्यों से सामाजिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियाँ को हम सर्वदा प्रोत्साहित करते है। विद्यालय वास्तव में शिक्षक के कर्मभूमि है शिक्षक राष्ट्रनिर्माता होता है बस यही बात मेरे मन को उद्वेलित करती है कि हम शिक्षक है हम शिक्षा की तस्वीर बदल देंगे, अंतःकरण से उत्तर मिला की सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना के बिना हमारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति के उददेश्यों की पूर्ति असंभव है।

Figure 1 विद्यालय प्रांगण

गतिविधियाँ (SOCIO CULTURAL ACTIVITIES) वेषभूषा :- विद्यालय ज्ञान का प्रवेश द्वार है। विद्यालय सामाजिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों से गहरा प्रभावित होता है। हम जिस समाज में रहते है वहाँ की लोकप्रथा, लोककृति, लोकसंस्कृति में बच्चे पलते बढ़ते है। बच्चे जब विद्यालय की चहारदीवारी में कदम रखते है स्वाभाविक रुप से सांस्कृतिक व सामाजिक मूल्यों को लेकर आते है। संस्कृति अत्यंत व्यापक शब्द है जिसे शब्दों में परिमित करना कठिन है। समय-समय पर विद्यालय में आयोजित होने वाले शैक्षणेत्तर कार्यक्रमों में पालकों, ग्रामीण जनों तथा जनप्रतिनिधियों का आना होता है। जिससे विद्यालय के प्रति गहरा जुड़ाव होता है। ग्रामीण अंचलों मे सुआ नृत्य, राउत नाचा, पंथी, रहस नृत्य आदि होते है जिससे बच्चो के मन में अपने सांस्कृतिक मूल्यों का भाव पोषित होता है। अपने संस्कृति के प्रति प्रेम भाव जागृत होता है। जिससे बच्चे आल्हादित व आनंदित होते है। वेशभूषा का विद्यालय में आयोजित कार्यक्रमों में विशेष भूमिका होती है। एक

ओर जहाँ वेशभूषा से बच्चे का सौन्दर्य बढ़ जाता है वहीं दूसरी ओर सांस्कृतिक विरासत तथा गौरवशाली परम्परा से अवगत होते है।

उत्सव

उत्सव जीवन का आनंददायी क्षण होता है। हमारा देश उत्सवों से परिपूर्ण है। समाज में अनेक उत्सव होते है जिनका अपना सामाजिक व सांस्कृतिक महत्व होता है। समय-समय पर विद्यालय में अनेक कार्यक्रमों का आयोजन होता है। जैसे - बसंत पंचमी, शिक्षक दिवस, गांधी जयंती, कृष्ण जन्माष्टमी।

उक्त अवसरों पर पालक एवं समुदाय को आमंत्रित किया जाता है। जिससे समाज का विद्यालय के प्रति जुड़ाव होता है साथ ही भातृत्व प्रेम व आपसी सामंजस्य बढ़ता है। निश्चित रुप से विद्यालय में ऐसे कार्यक्रमों से बच्चों के मन में अपने समाज एवं संस्कृति के प्रति रुचि में अभिवृद्धि होता है।

वृक्षारोपण एवं स्वच्छता

सूखी धरती करे पुकार वृक्ष लगाकर करों श्रृंगार। विद्यालय का आकर्षक बाह्य तथा आंतरिक वातावरण बच्चों को गहरा प्रभावित करता है। एक ओर जहाँ वृक्षारोपण से पर्यावरण शुद्ध होता है वहीं दूसरी ओर वृक्षों के संरक्षण की भावना प्रबल होती है। हमारी समृद्ध सामाजिक व सांस्कृतिक परम्परा में वृक्षों को पूजा जाता है। जिससे पुरातन परम्परा का बोध होता है विभिन्न अवसरों जैसे - जन्मदिन, जयंती आदि में

बच्चे वृक्ष लगाते है जिससे उनके मन में पर्यावरण के प्रति जागरुकता का बोध होता है। वर्तमान समय में जहाँ पर्यावरण पर गहरा संकट उत्पन्न हो रहा है। विभिन्न अवसरों पर पालकों व जनप्रतिनिधियों द्वारा वृक्षारोपण किया जाता है, तथा बच्चों को उनके देखभाल की जिम्मेदारी दी जाती है ताकि वे पर्यावरण के प्रति सचेत हो सके।

विद्यालय की सामाजिक सांस्कृतिक गतिविधियाँ

उद्देश्य - 1. समाज की समृद्ध शाली परंपरा का छात्रों को बोध कराना

2. छात्रों में सामाजिक, मानवीय मूल्यों का विकास करना

3. विद्यालयीन गतिविधियों में जन समुदाय को जोड़ना

4. छात्रों में अंतर्निहित प्रतिभा को मंच प्रदान करना

5. छात्रों में अनुशासन, अभिप्रेरणा की भावना जागृत करना

6. छात्रों में पुरातन संस्कृति के प्रति रुचि जागृत करना

7. राष्ट्रीय शिक्षा नीति के उद्देश्यों की पूर्ति करना

योजना

1. विद्यालय में आयोजित बैठकों में पालकों, जनप्रतिनिधियों की भागीदारी सुनिश्चित करना
2. विद्यालय में पालक सम्मेलन, माता उन्मुखीकरण का आयोजन
3. निश्चित अंतराल पर सांस्कृतिक आयोजन जिससे उनके मन में विद्यालय के प्रति गहरी अभिरुचि
4. स्वच्छता अभियान, वृद्ध जनसम्मान समारोह व बेटी बचाव बेटी पढ़ाव
5. ग्रामीण जनों द्वारा अंचलित त्यौहार की पृष्ठभूमि, अनुभवों व मान्यतावों को साझा करना
6. विद्यालय में ग्रामीण परम्परागत खेल के आयोजन के माध्यम से बच्चों में टीम भावना को विकसित करना
7. प्रतिदिन प्रार्थना के समय सुविचार, अखबार वाचन, सामान्य ज्ञान के कार्यक्रम आयोजन करना ताकि छात्रों में बौद्धिक क्षमता का विकास हो
8. बालिका शिक्षा को प्रोत्साहन हेतु चित्रकला, पेंटिंग एवं विविध कार्यक्रमों का आयोजन

क्रियान्वयन

बच्चों को सर्वांगीण विकास के अवसर उपलब्ध कराना ताकि उनमें छुपी हुई भावनाओं का प्रस्फुटन हो। समाज में होने वाले नृत्य नय परिवर्तनों का विद्यालय पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। बच्चों के बौद्धिक विकास,

सांस्कृतिक प्रत्येक शनिवार को योग व ध्यान, बालसभा, सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता के साथ प्राकृतिक व सामाजिक परिवेश के अध्ययन हेतु कार्य योजना तैयार किया गया है। समय - समय पर परंपरागत व्यवसाय से जुड़े। लोगों के अनुभवों को साझा किया जाता है ताकि बच्चों को परंपरागत व्यवसाय की जानकारी हो सके । समय-समय पर विद्यालय में आंचलित खेलों का आयोजन किया जाता है। जैसे - फुगड़ी, गिल्ली-डंडा, भौरा, गेड़ी-दौड़, राम-रावण का खेल होता है जिससे बच्चों का शारीरिक विकास के साथ-साथ इन खेलों की जानकारी होती है। समय-समय पर आयोजित इन खेलों से समाज में विद्यालय की बेहतर छवि बनती है। तथा समाज को विद्यालय से जोड़ने में आशातीत सफलता मिलती है।

शालेय स्वच्छता एवं जनजागरूकता रैली हेतु चुनौती आज से लगभग 13 वर्ष पूर्व इस विद्यालय में पद स्थापना हुई उस समय विद्यालय मूलभूत सुविधाओ को तरस रहा था। समुदाय की रुचि का अभाव स्पष्ट रुप से परिलक्षित होता था, संसाधनो के अभाव के चलते अध्यापन करवाना किसी चुनौती से कम नही था लेकिन समस्याओ के बीच ही सम्भावना का जन्म होता है इच्छा शक्ति व दृढ़ संकप हो तो बड़ी - बड़ी बाधाओं का हल ढुंढा जा सकता है।

1. भौतिक तथा न्यूनतम आर्थिक संसाधन
2. बच्चों की अनियमित उपस्थिति
3. जनभागीदारी व शाला प्रबन्ध समिति के सदस्यो की बैठको मे क्षीण उपस्थिति
4. उच्च शाला त्यागीदर
5. समुदाय का विद्यालय के प्रति रुचि का अभाव
6. मातृशक्ति का विद्यालयीन गतिविधियों में कम भागीदारी होना

Figure 2 Ekkuuh; dysDVj MkW- ,l- Hkkjrhnklu }kjk fo|ky; fujh{k.k

उपलब्धियाँ

विद्यालय में होने वाली नियमित गतिविधियों से समुदाय का विद्यालय के प्रति विश्वास बढ़ा है। शिक्षा जगत में शिक्षक तभी बेंहतर परिणाम की अपेक्षा कर सकता है जब जनसमुदाय से बेहतर संबंध हो। विभिन्ना शैक्षणिक लक्ष्यों जैसे- बालिका शिक्षा अधिकाधिक उपस्थिति समृद्ध सामाजिक व सांस्कृतिक वातावरण तभी

संभव है जब पालक शिक्षक व समुदाय समन्वित प्रयास करें। विद्यालय व जनसमुदाय के मध्य बेहतर संबंध बने जिसके कारण विद्यालय ने अंचल एवं जिले में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। समुदाय के सहयोग से संसाधन नवविचार, विकासात्मक योजना को जोड़कर बेहतर परिणाम मिला। विद्यालय ने समुदाय के माध्यम से अभिनव प्रयास एक कदम नाम दिया गया हैं। इसके माध्यम से समुदाय को विद्यालय से जोड़ने का सफल प्रयास किया गया है। इस प्रयास के माध्यम से बच्चों में सांस्कृतिक व सामाजिक विकास संभव हुआ है।

एक कदम के बेहतर क्रियान्वयन के लिए विद्यालयीन गतिविधियों की जानकारी जनसामान्य को दी जाती है। विद्यालय में शैक्षिक , खेलकूद तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों में सहयोग करने वाले लोगों को मीडिया व संचार साधन के माध्यम से धन्यवाद के साथ महत्वपूर्ण अवसरों पर सम्मानित किया जाता है।

हमारी संस्कृति विश्व की महानतम संस्कृति है। विविधता में एकता तथा विश्व बंधुत्व हमारी संस्कृति को विशिष्टता प्रदान करती है। संस्कृति वह कृति है जो हमें सुसंस्कृत बनाती है। हमारी सामाजिक व सांस्कृतिक परंपरा काफी समृद्धशाली रही है। स्वाभाविक रुप से इन परंपरा व मूल्यों को लेकर बच्चे विद्यालय आते हैं। व इसके प्रभाव से बच्चों में सामाजिक व सांस्कृतिक बदलाव संभव है। साथ ही बच्चों के मन में मानवीय मूल्यों का विकास होता है।

मुझे यह सुखद अनुभूति होती है जब दूर - दूर से लोग विद्यालय को देखने आते है। मैं अपने अनुभव से यह समझ पाया हूँ कि सामाजिक व सांस्कृतिक सहभागिता से शिक्षा की तस्वीर बदली जा सकती है। आवश्यकता है केवल दृढ़ संकल्प शक्ति।

उपसंहार

बच्चे देश का भविष्य होते है। भारत की अपनी समृद्धशाली संस्कृति रही है। चूंकि बच्चे का मस्तिष्क कोमल होता है। इस उम्र मे जब बच्चा समाज एवं विद्यालय में होने वाली गतिविधियों का सूक्ष्मता से अवलोकन करता है। तो इसकी छवि दीर्घकाल तक उनके मस्तिष्क में अंकित होता है। संस्कृति वह कृति है जो हमें सुसंस्कृत बनाती है। विद्यालय में समय-समय पर होने वाले इन कार्यक्रमों से बच्चों में निश्चित रुप से सर्वांगीण विकास होता है।

सामुदायिक सहभागिता का अभिनव प्रयास “एक कदम”

संदर्भ :-

1. विद्यालय की सामाजिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियाँ पर रिपोर्ट
2. नवाचारी गतिविधि के अंतर्गत विद्यालय में सतत चल रहे क्रियाकलापों का चित्रण
3. निरंतर विकास की ओर बढ़ते हुए विद्यालय की गतिविधियों की संक्षिप्त प्रस्तुतीकरण

जुड़ाव :-

विद्यालय में निरंतर होने वाले सामाजिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों में पालकों व समुदाय का गहरा जुड़ाव देखने को मिलता है। तथा समुदाय के सहयोग से विद्यालय को अंचल के श्रेष्ठ विद्यालय बनाने हेतु अग्रसर है। इस दिशा में आशातीत सफलता मिली है।

महारानी लक्ष्मी बाई शासकीय आदर्श कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय
राजनांदगांव (छ.ग.)
प्राचार्य - डॉ. श्रीमती कृष्णा अग्रवाल
ईमेल- agrawal.krishna9827991924@gmail.com, मो.नं.- 9827991923

विद्यालय को उत्कृष्ठ बनाने हेतु समस्याओं को समझना, समाधान हेतु प्रयास करना एवं सफलता प्राप्त करना।

विद्यालय में पायी गयी समस्यायें :-

(1) कमरों की छत जर्जर होना
(2) शाला में महारानी लक्ष्मीबाई की प्रतिमा का अभाव
(3) शाला में खेल का उपयुक्त मैदान न होना
(4) विद्यालय में आडिटोरियम का अभाव
(5) कमरों की फलोरिंग टूट-फूट जाना
(6) बाउंड्रीवाल जर्जर होना
(7) सायकल स्टेण्ड की कमी होना
(8) शाला की नाली का जर्जर होना
(9) शाला परिसर के अंदर एवं सामने पानी का जमाव
(10) जहरीली जीवों से शाला परिसर में दुर्घटना की संभावना
(11) विद्यालय परिसर के अंदर 06 वृक्षों का खोखला होना एवं कभी भी दुर्घटना होने की संभावना होना
(12) विद्यालय का परीक्षाफल संतोषजनक न होना
(13) शाला में कम्प्यूटर का अभाव
(14) प्रोजेक्टर का अभाव
(15) फर्निचर का अभाव
(16) म्यूजिक सिस्टम का अभाव
(17) स्वच्छता का अभाव
(18) टूटा-फूटा फर्निचर का जमा होना
(19) उपयुक्त प्रयोगशाला का अभाव
(20) छात्राओं का स्वास्थ्य कमजोर होना
(21) छात्राओं में नैतिकता एवं अनुशासन का अभाव
(22) हरियाली का अभाव
(23) NCC गाइड एवं खेल में उत्कृष्टता में कमी
(24) मध्यान्ह भोजन जमीन में बैठाकर करवाया जाना
(25) किचन गार्डन का न होना
(26) कोरोना वायरस संक्रमण सन् 2020-21 मे पढ़ाई एवं अन्य व्यवस्था को व्यवस्थित करना।

लक्ष्य निर्धारण, लक्ष्य प्राप्ति हेतु किये गये प्रयास एवं प्राप्त लक्ष्य

(1) **नयी बिल्डिंग हेतु प्रयास -** माननीय सांसद महोदय से मिलकर समस्या से अवगत कराना एवं मांग करना।

(2) **शाला में महारानी लक्ष्मीबाई की प्रतिमा स्थापित करने के लिए प्रयास-** माननीरय सांसद महोदय से मिलकर समस्या से अवगत कराना एवं मांग करना।

(3) **शाला में खेल का उपयुक्त मैदान हेतु प्रयास -** माननीय सांसद महोदय से मिलकर समस्या से अवगत कराना एवं सुदृढ़ीकरण हेतु मांग करना।

(4) **ऑडिटोरियम निर्माण हेतु प्रयास -** माननीय सांसद महोदय से मिलकर समस्या से अवगत कराना एवं सुदृढ़ीकरण हेतु मांग करना।

लक्ष्य की प्राप्ति-

✓ माननीय श्री अभिषेक सिंह जी सांसद, राजनांदगांव द्वारा नये भवन हेतु सत्र घोषणा की 2016 में नये भवन हेतु भूमिपुजन किया 2018 अप्रैल 21 गई व गया निर्माण कार्य प्रगति पर है।

✓ महारानी लक्ष्मीबाई की प्रतिमा व जर्जर कमरे की छत सुदृढ़ीकरण हेतु राशि की घोषणा की गई।

✓ ऑडिटोरियम व खेल के मैदान हेतु मुख्यमंत्री जी से बात कर पूर्ण कराने का आश्वासन दिया गया, स्मार्ट क्लास का निर्माण हुआ।

(5) **कमरों का सुदृढ़ीकरण हेतु प्रयास -** माननीय विकासखंड शिक्षा अधिकारी को अवगत कराना एवं माननीय महापौर महोदय से मिलकर समस्या से अवगत कराना एवं सुदृढ़ीकरण हेतु मांग करना।

(6) बाउंड्रीवाल सुदृढ़ीकरण हेतु प्रयास - जिला विभाग राजनांदगांव के माध्यम से किया गया।

(7) सायकल स्टेण्ड निर्माण हेतु प्रयास - शिक्षा विभाग राजनांदगांव के माध्यम से किय गया।

(8) शाला के अंदर नाली एवं सुदृढ़ीकरण हेतु प्रयास- माननीय महापौर महोदय से मिलकर समस्या से अवगत कराना एवं सुदृढ़ीकरण हेतु मांग करना।

(9) **शाला परिसर के अंदर एवं सामने पानी का जमाव समाप्त करने हेतु प्रयास-** माननीय महापौर राजनांदगांव से सहयोग प्राप्त कर समस्या का समाधान किया गया।

(10) **जहरीली जीवों से बचने हेतु प्रयास -** सभी खिड़कियों पर बारिक जाली संधारित की गयी।

(11) **कमजोर वृक्षों को कटवाने का प्रयास -** वन विभाग एवं जिलाधीश महोदय तक समस्या का समाधान हेतु पत्राचार किया गया है।

लक्ष्य की प्राप्ति-

✓ उपर्युक्त लक्ष्य प्राप्ति हेतु जिला शिक्षा अधिकारी राजनांदगांव, आयुक्त नगर निगम राजनांदगांव विकास खंड शिक्षा अधिकारी राजनांदगांव, माननीय महापौर श्री मधुसूदन यादव जी, नगर निगम राजनांदगांव के सहयोग से निर्माण मरम्मत संबंधी कार्य संपन्न हुए।

✓ अनुविभागीय अधिकारी लोक निर्माण विभाग राजनांदगांव, वन मंडलाधिकारी राजनांदगांव, माननीय जिलाधीश महोदय राजनांदगांव, तहसीलदार राजनांदगांव के सहयोग से जर्जर पेड़ कटवाकर भविष्य की दुर्घटना से बचने में सहयोग मिला।

(12) विद्यालय का परीक्षाफल संतोषजनक बनाने हेतु प्रयास

- ग्रीष्म कालिन अवकाश में विषय शिक्षकों द्वारा उपर्युक्त गृह कार्य देना।
- शाला खुलने के पश्चात् प्रथम सप्ताह में पूर्व पाठ्यक्रम का रिविजन करवाया जाता है।
- समय से पाठ्यक्रम को कम्पलीट कराना,
- हर ईकाई के पूर्ण होने के पश्चात् टेस्ट लेना,
- कमजोर छात्रों के साथ होशियार छात्रों के साथ बैठक व्यवस्था बनाना एवं एक दूसरे के प्रति उनकी जिम्मेदारी सुनिश्चित करना।
- शिक्षक द्वारा कक्षा में छात्राओं को समूह में बांटना एवं उनका एक लीडर बनाकर संबंधित छात्राओं की गतिविधियों का परीक्षण करते रहना।
- विभिन्न विषयो में गृह कार्य करवाकर उनको जांच करवाना।
- समयसमय पर अध्यापन हेतु प्रोजे-क्टर का उपयोग करना।
- शिक्षण अध्यापन के साथसाथ प्रायोगिक कार्य भी संपन्न करवाना।-
- प्राचार्य द्वारा छात्राओं के सीधे संपर्क द्वारा समस्याओं का जानकारी लेना।
- समयानुसार समय सारिणी में परिवर्तन कर विशेष विषयों का अध्यापन कार्य कराया जाना।
- पाठ्यक्रम समाप्त होने के पश्चात् अर्धवार्षिक परीक्षा परिणाम के आधार पर वर्ग निर्धारित कर उनके आवश्यकतानुसार अध्यापन एवं अभ्यास करवाया जाता है।
- पूर्व के पांच वर्षो के प्रश्न पत्रों को हल करवाना ताकि शिक्षा विभाग द्वारा दिये गये अन्य योजनाओं को लागू करना।
- आवश्यकतानुसार अतिरिक्त कक्षा लगाकर अध्यापन एवं रिविजन कार्य करवाना।
- हड़ताल पर गये शिक्षकों के स्थान पर उचित माध्यम से पाठ्यक्रम को पूर्ण कराना।
- हर परीक्षा के पश्चात् विषय शिक्षकों, शाला प्रबंधन एवं विकास समिति छात्र संघ, एवं पालाको के साथ बैठक कर समस्या का समाधान करने का प्रयास किया जाता है।
- वार्षिक परीखा पूर्व महिने तक रिविजन का कार्य कराया जाता है। 1

- पूरक प्राप्त एवं फेल बच्चों के लिये रेमेडियल क्लास का आयोजन।

लक्ष्य की प्राप्ति

- ✓ परीक्षा परिणाम सुधारने हेतु उपर्युक्त प्रयासों के फलस्वरूप प्राप्त परिणाम संतोषजनक पाया गया।
- ✓ सत्र 18-2017में गृहविज्ञान विषय की छात्रा ने प्रवीण्य सूची में नाम दर्ज करवाया।
- ✓ शाला की में चयन हुआ। 18-2017 छात्राओं का राष्ट्रीय साधन सह प्रवीण्य छात्रवृत्ति परीक्षा में 2

(13) **कम्प्यूटर लैब हेतु प्रयास-** एच.पी.सी.एल. एवं एन.आई.आई.टी के सहयोग से।

(14) **प्रोजेक्टर प्राप्त करने हेतु प्रयास -** जीवन बीमा निगम राजनांदगांव से सहयोग की मांग

(15) **फर्निचर प्राप्त करने हेतु प्रयास -** जिला शिक्षा कार्यालय से मांग की गयी।

(16) **म्यूजिक सिस्टम प्राप्त करने हेतु प्रयास -** लायंस क्लब राजनांदगांव से मांग रखी गयी।

(17) **स्वच्छता निर्मित करने हेतु प्रयास -**

- छात्राओं में विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से जैसे चित्रकला, निबंध, स्लोगन, वादविवाद, रंगोली, शपथ, रैली इत्यादि गतिविधियों के माध्यम से जागरूकता लाना।
- शिक्षक स्तर एवं छात्राओं के स्तर पर स्वच्छता समिति का गठन करना।
- विद्यालय में आदिमजाति कल्याण विभाग राजनांदगांव के सहयोग से सेनेटरी नेप्कीन बेंडीग मशीन लगवाने हेतु प्रयास।

लक्ष्य की प्राप्ति-

✓ उन्नति प्रोजेक्ट के तहत एन .पी .व एच .टी.आई.आई. 12 के संयुक्त सहयोग से विद्यालय को निःशुल्क .एल .सी वीं तक की छात्राओं को निःशुल्क 12 वीं से 7 कम्प्यूटर एवं कक्षा कम्प्यूटर का प्रशिक्षण दिया गया साथ ही छात्राओं को नियमित कम्प्यूटर प्रशिक्षण दिया जाता है।

✓ समाजिक संस्थानों से प्रोजेक्टर, म्यूजिक सिस्टम, फर्नीचर, सेनेटरी नैप्किंग वेंडिग मशीन प्राप्त की गई।

✓ स्वच्छता पुरस्कार प्राप्त हुआ। 17-2016

(18) **टूटा-फूटा फर्नीचर को हटाने का प्रयास -**तात्कालीन जिला शिक्षा अधिकारी एवं शाला प्रबंधन एवं विकास समिति से अनुमति प्राप्त करना।

लक्ष्य की प्राप्ति-

- ✓ जिला शिक्षा अधिकारी, शाला प्रबंधन एवं विकास समिति के सहमति से विद्यालय में पिछले कई सालों में टुटेफूटे अनुपयोगी फर्निचर का विक्रय किया गया एवं राशि को शाला विकास निधि में जमा किया - गया।

(19) विद्यालय में लेब हेतु अटल टिकरिंग लेब के लिए नीति आयोग से सहयोग प्राप्त करने हेतु प्रयास-

लक्ष्य की प्राप्ति-

 विद्यालय का ए.टी.एल. टिकरींग लेब हेतु पंजीयन कराकर सत्र 2017-18 में नीति आयोग से सहमति प्राप्त की गयी। तौल निर्माण कार्य में मान. महापौर राज. का सहयोग प्राप्त हुआ।

(20) छात्राओं के व्यक्तित्व विकास हेतु किये गये प्रयास-

- प्रार्थना को उचित रीति से करवाना।
- प्रार्थना पश्चात् प्रतिदिन भ्रामरी एवं ध्यान 20 मिनट तक(योग) करवाना (
- शाला में विभिन्न जगहां पर सुविचार लिखवाए गये।
- पुस्तकालय की पुस्तकों को विभिन्न कक्षाओं में प्रतिदिन कक्षा में ही उपलब्ध कराना सुनिश्चित कराया जाना।
- विज्ञान संबंधी आदर्श नाटिका, प्रोजेक्ट, इत्यादि में छात्राओं की सहभागिता सुनिश्चित की जाती है।
- सांस्कृतिक गतिविधियां सम्पन्न करायी जाती है।
- विद्यालय एवं अन्य विभागों में होने वाली कार्यक्रमों में छात्रों की सहभागिता सुनिश्चित की जाती है।
- समाजसेवी लोगों को बुलाकर विभिनन नैतिकता संबंधी जानकारी दिलवायी जाती है।
- भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का आयोजन विद्यालय में करवाया जाता है।
- यातायात संबंधी जानकारी दिलवाई गई। बैंक संबंधी जानकारी दी जाती है।
- समर कैंप का आयोजन किया जाता है।

लक्ष्य की प्राप्ति-

- ✓ छात्राओं की व्यक्तिगत विकास हेतु उपर्युक्त प्रायास किये गये तथा वर्तमान में छात्राओं में सकारात्मक प्रभाव देखा जा रहा है।

(21) छात्राओं का स्वास्थ्य सुधार हेतु प्रयास - समाज सेवी संस्थाओं एवं शासकीय चिकिक्सालय से संपर्क कर सहायता प्राप्त की गयी।

लक्ष्य की प्राप्ति

- ✓ जिला चिकित्सालय से संपर्क कर छात्राओं का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया।
- ✓ स्वास्थ्य परीक्षण पश्चात् आंख संबंधी विकार, सिकलिंग , एनिमिया इत्यादि जैसी बीमारियाँ का ईलाज समता मंत्र राजनांदगांव द्वारा निःशुल्क किया जाता है।

(22) शाला परिसर के अंदर एवं बाहर हरियाली निर्मित करने का प्रयास- विभिन्न छात्राओं द्वारा विभिन्न पेड़ पौधों को विद्यालय में रोपित करके हरियाली निर्मित की गयी।

लक्ष्य की प्राप्ति-

- ✓ विद्यालय परिवार में पेड़ पौधे लगाकर हरियाली सुनिश्चित कर ली गयी है।

(23) NCC एवं गाइड व खेल में उत्कृष्टता लाने हेतु प्रयास-

I. NCC एवं गाइड मे उत्कृष्टता लाने हेतु छात्राओं को शिविरों में भेज कर एवं प्रशिक्षित मार्गदर्शक के द्वारा प्रशिक्षण दिलवाया गया।

II. खेल में उत्कृष्टता लाने हेतु प्रयासखेल संबंधि सामग्री आवश्यक मात्रा में उपलब् -ध कराई गई एवं छात्राओं को प्रेरित किया गया।

लक्ष्य की प्राप्ति-

- ✓ छात्राओं के राज्य एवं राष्ट्र स्तर पर उपलब्धि प्राप्त करते हुए शाला को गौरवान्वित किया।

(24) विद्यालय के एक कमरे में अतिरिक्त फर्नीचर व्यवस्थित कराकर छात्राओं को मध्यान्ह भोजन करने की व्यवस्था की गई है।

(25) विद्यालय के परिवार में ही कुछ हिस्से में किचन गार्डन भी लगाया गया।

(26) कोरोना वायरस संक्रमण (सत्र 2020-21) के कारण स्वयं के द्वारा छात्राओं को ऑनलाइन क्लास लेकर व विषय सामग्री पर आधारित वीडियो बनाकर शिक्षकों को भी इन कार्यो हेतु प्रोत्साहित किया गया। घर पर रहते हुए योग अभ्यास करने हेतु प्रेरित किया गया, साथ ही कोरोना संक्रमण संकट में धैर्य बनाये रखने व जन सामान्य को जागरूक करने संबंधी वीडियो बनाकर प्रचार-प्रसार किया गया।

फिट इंडिया मूवमेंट के तहत प्राचार्य द्वारा स्वयं प्रतिदिन शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने हेतु व्यायाम एवं योग की क्रियाएँ की जाती है साथ ही वीडियों बनाकर स्टाफ के साथ भी शेयर करके उन्हें प्रोत्साहित किया जाता है।

NCC में छात्रों की उपलब्धि:-

i	03.07.16	&	12.07.16	&	TSC, CATX कैंप का लाभ **06** छात्राओं द्वारा प्राप्त किया गया।
ii	19.07.16	&	28.07.16	&	TSC कैंप का लाभ **03** छात्राओं द्वारा प्राप्त किया गया।
iii	2016 में 02 छात्राओं को राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त हुआ तथा राष्ट्रीय दिवस पर दिल्ली परेड में शामिल होने का सम्मान प्राप्त हुआ।				
iv	छात्राओं को बोर्ड परीक्षा में अंक लाभ प्राप्त।				
v	छात्राओं का सरकारी नौकरी प्राप्त ।				

गाइड में छात्राओं की उपलब्धि

i. छात्राओं द्वारा राज्य स्तरीय जम्डरी का लाभ प्राप्त किया गया-
   जम्बुरी जगदलपुर 2016, 06 छात्रायें
   सूरजपुर जम्बुरी 2017, 07 छात्रायें
   जम्बुरी राजनांदगांव 2018, 20 छात्रायें
ii. राज्यपाल पुरस्कार प्राप्त - 06 छात्रायें 2016 में।
iii. आपदा प्रबंधन प्रशिक्षण प्राप्तपचमढ़ी में - 02 छात्रा 2017 11 छात्राओं से लाभ प्राप्त किया।
iv. शिविर का लाभ - मालीगुड़ी, बालोद, बघेरा (2016), (2019)
v. छात्राओं को बोर्ड परीक्षा में बोनस अंक प्राप्त।

यू ट्यूब विडिओ लिंक

1. https://documentcloud.adobe.com/link/track?uri=urn:aaid:scds:US:840c9e1a-275f-442a-9d1e-1326027652f4#pageNum=1
2. https://youtu.be/IeRtX3Qly9Q
3. https://youtu.be/H8zDmQQBdvM
4. https://youtu.be/tz9crhmzAK8
5. https://youtu.be/DvzRfabsB2c
6. https://youtu.be/e-4ULyLhA94
7. https://youtu.be/mau3rwgMEpA
8. https://youtu.be/NQxUaD6S9yM
9. https://youtu.be/bgrAffX38Xs
10. https://youtu.be/7fHfH7R7TDs
11. https://youtu.be/m8emBi9icdM
12. https://youtu.be/gj3J7RRkqPw
13. https://youtu.be/ghetU-QefYw
14. https://youtu.be/xm9xfBHTdd0
15. https://youtu.be/vwo2zJU1BlA
16. https://youtu.be/yDNzdzZFJnc
17. https://youtu.be/qsDIOCAM0OY
18. https://youtu.be/9Xlr-mZ804M
19. https://youtu.be/JCTmkD_PYls
20. https://youtu.be/crxgrnTGj9w
21. https://youtu.be/LToRl6GOlD8
22. https://youtu.be/crxgrnTGj9w
23. https://youtu.be/bpErUPyo0qM

शासकीय प्राथमिक शाला पिपराही (छ.ग.)

प्रधानपाठक - श्रीमती मोहिनी

ईमेल- mohinigoswami389@gmail.com, मो.नं.- 9340294717

मैं और मेरा स्कूल –

मैं प्राथमिक शाला पिपराही में 23 सालों से पदस्थ हूँ,मेरी शाला में शुरू से दो शिक्षक रहे ।पहले 8 साल श्री मेघराज टंडन प्रभारी रहे उनसे मैने शाला प्रबंधन की बारीकियां सीखी।मैंने टंडन जी से समुदाय की सहभागिता किस तरह आवश्यक है सीखा।पिछले पंद्रह सालों से मैं स्कूल में प्रभारी हूँ तब से मुझे पूर्ण रूप से गांव वालों का पूर्ण सहयोग मिल रहा है। मेरे गांव की खासियत यह है वे किसी भी बात को ध्यान से सुनते है और समझते हैं ।बच्चों के हित में क्या सहीं है मुझे थोड़ा से उन्हें दिशा देना बस पड़ता है फिर वे पूर्ण रूप से उसे क्रियान्वयन करते हैं , मेरी शाला आज अपनी सुंदरता और समुदाय की सहभागिता के लिए जाना जाता है, जहां सबको ये शिकायत रहती है की गांव वाले सहयोग नही करते वही मेरे लिए ये बहुत ही फक्र की बात है मेरे एक इसारे पे सारा गांव स्कूल में एकत्रित हो जाता है।इसके कई पहलू हैं पहला तो एक ये भी है की मैं यहीं गांव में ही रहती हूँ और हर समय गांव वालों के संपर्क में रहती हूँ मुझे हर समय स्कूल के लिए समय देने का अवसर मिल जाता है कभी कभी गांव वालो के समय के हिसाब से भी मैं उनके समय बैठक आदि रख कर अपनी बाटे रख देती हूँ जिससे उन्हें कोई परेशानी न हो। शाला प्रबंधन समिति हमेशा से ही मेरे लिए मेरी शाला के लिए सजग रहा मैने अपनी समिति के अलावा 5 सदस्यों की एक टीम और बनाई है जो हमेशा से ही मेरी शाला के परमानेंट सदस्य हैं मेरी इस टीम का नाम है शाला संरक्षक टीम ये सदस्य परमानेंट है शरू से ये गांव के वे बुजुर्ग हैं जो गांव में एक पहचान स्थापित कर चुके हैं और ये हमेशा से गांव का हित पर ध्यान देते हैं और लोग उनकी बताओं को समझते और मानते हैं इसलिए ये मेरे वे सिरमौर हैं जो मेरी शाला को अलग बनाने में सहयोग करते है। ये मेरी सोंच को रूप देते हैं शाला प्रबंधन समिति में जो भी बात रखी जानी है मैं इन्ही के माध्यम से रखती हूँ इसलिए मेरी कार्य कभी असफल नहीं हुए । मेरी शाला की अपनी अलग पहचान है तो वे इस लिए की मेरी शाला में पूरा गांव ही जागरूक सदस्य के रूप में जुड़ा है। है छोटा से गांव यहां भी वही ग्रामीण भेदभाव है जातिवाद है आपसी रंजिशें हैं , पर मेरी शाला में घुसते ही सब एक हो जाते हैं। और मेरी बातों को सुनते है मुझे भी मार्गदर्शन देते है ऐसा है मेरा स्कूल और उसका प्रबंधन। आइये आज हम देखेते है समुदाय की सहभागिता से स्कूल के लिए क्या क्या कार्य किये हैं उन्हें बिंदुवार देखते हैं।

निजी स्कूल के बच्चों को हमारी शाला में लाना--

मेरी शाला बहुत छोटे से गांव में है तीन गांव की एक पंचायत यहां पर जनसंख्या भी बहुत कम है मेरे गांव की कुल जनसंख्या ही 430 के लगभग है और यह गांव शहर या कस्बे से मात्र 3 किलोमीटर पर ही है इसलिए कुछ लोगों को देखा देखी में निजी स्कूल का शौक चढ़ जाता है रोज खुद ही लाना ले जाना कर लेते हैं खर्च काम पड़जाता है ।इसके कारण मेरी शाला के दर्ज पर भी फर्क पड़ता है मैने समुदाय और समिति के सहयोग से

सबको जागरूक कर बहुत से बच्चों को अपनी शाला में लाया पालकों से वादा किया की उन्हेंक भी भी पढ़ाई के लिए किसी भी प्रकार से कोई शिकायतें नहीं होंगी वे जो भी अपेक्षा निजी स्कूल से रखते हैं उससे कहीं ज्यादा हम कर के दिखाएंगे ।सबने बाते समझी और फिर मेरी शाला में लगभग 10 बच्चे तुरंत ही निजी स्कूल से निकल कर आये । और उन्हें कभी निराशा नही हुई ।

वृक्षारोपण --

हमारी शाला की सुंदरता है उसका हरा भरा वातावरण मैने समुदाय की सहयोग से अपनी शाला को इतना सुंदर बनाया है की उसे हर कोई देखकर खुश हो जाता है जगह काम है फिर भी मेरी शाला में 4 आम 3 अमरूद 2 खम्हार 2 डगर 2 दसमत 1 नीम 10 आरकेशिया 2 सीताफल 10 कनेर 2 करंज और बहुत से शो पत्ति आदि के पौधे हैं । पूरा शाला अभी हर भरा और खिला खिला दिख रहा है बसंत अभी मेरी शाला में शबाब पर है।इसमे गांव वाले बहुत खुश है शाला का वातावरण बहुत ही शुद्व है बच्चों के लिए करके। मैं तो अक्सर बच्चों को पेड़ के नीचे बिठाकर ही पद्धति हूँ।

कोरोना काल में अहम जिम्मेदारी--

कोरोना काल में गांव वालों ने हिम्मत पालकों को जागरूक करने मेरी मदद की। सबने मेरा सहयोग किया और सबने मिलकर बच्चों की कक्षाएं शाला के बाहर लगाई और कोरोना के दौर को बिना किसी परेशानी के मेरी क्लास आज भी चल रही हैं,प्रतिदिन क्लास की निगरानी भी करते हैं मास्क भी उपलब्ध कराते है सामाजिक दुरी हाथ धोने के लिए समझाते है कोई भी समस्या बताने पर निराकरण में देरी नही करते । गांव वालो की शिक्षा के प्रति जागरूकता ने हमे और कुछ अच्छा बच्चों के प्रति कर जाने की प्रेरणा देते हैं।

बच्चों को सहयोग---

मेरे समुदाय के लोग बहुत ही जागरूक है न सिर्फ वक्त आने पर कॉपी पैन की व्यवस्था करते हैं बल्कि मेरे यहां एक बच्चे का पैर घर में खेलते हुए फ्रेक्चर हो गया उसके पालक उसका इलाज नही कर सके बहूत समझाने पर भी पालक असमर्थ दिखे मैने गांव वालो को बुलाया बच्चे की अनुपस्थिति का कारण समझाया ,तो गांव वालों ने उसकी मदद की और चंदा कर बच्चे को बड़े अस्पताल भिजवाया जिससे अब बच्चा चल पाता है ऐसा दो बच्चों के लिए कर चुके हैं।

स्कूल लाने के लिए प्रेरित करना ---

कई पालक ऐसे हैं जो बच्चों को स्कूल भेजने के लिए कोई ध्यान नही देते बच्चा गया नही गया ये सब उन्हें पता ही नही होता ऐसे में बच्चों को प्रेरित करना पालकों को समझाना ये सब मेरे समुदाय के लोग करते हैं ।मुझे एक इसारे बस करना पड़ता है फिर मेरे समुदाय के लोग उसे अच्छे से समझ जाते हैं।उनके सहयोग से आज भी बच्चों की उपस्थिति 100 / रहती है।

पलायन करने वाले परिवारके बच्चों को शाला में बने रखने हेतु प्रयास-—

मेरी शाला में बहुत से पालक ऐसे हैं जो बाहर चले जाते है जैसे ईंट बनाने हेतु राजमिस्त्री के काम हेतु और अन्य कार्य पर , मेरे गांव में एक विशेस प्रजाति के लोग जो वासुदेव कहलाते हैं वे भिक्षावृत्ति करते हैं वे भी मौसम अनुसार बीच बीच में घर से बाहर चले जाते हैं जिसके कारण उनके बच्चों का पढ़ाई बहुत ही डिस्टर्ब होता है दो महीने चार महीने वे बाहर रहते हैं बच्चों को भी ले जाते हैं उन्हें समझाने केलिए मैने कई बैठके की बढ़ी मुश्किल से हम कामयाब हुए अब वे लोग बच्चों को छोड़कर जाते हैं पढ़ाई अब बच्चों की अच्छी हो चली है जो लोग पलायन जरते हैं उन्हें भी बहुत ही प्रेम से समझने पर अब वे पलायन करते जाते हैं तो बच्चों को छोड़कर जाते हैं मेरी शाला में समुदाय के सहयोग से 100/ उपस्थिति रहती है।

प्रार्थना भजन एवम ध्यान ----

गांव वालों के सहयोग से मैने एक क्लास में माता सरस्वती की मूर्ति स्थापितकी है संगमरमर की चूंकि यहाँ एक ही धर्माधर्मी लोग हैं इस कारण यहां पर कोई समस्या नही है बच्चे प्रतिदिन 15 मिनट आरती पूजा भजन करते है और ध्यान भी करते है हर कक्षा की एक एक दिन बारीआती है गुरुवार कोसभी बच्चे मिलकर आरती और भजन कीर्तन करते हैं तथा ध्यान करते हैं । समुदाय के लोग जब ये सब देखते हैं तो खुश होते हैं की बच्चों का समग्र विकास हो रहा है। गांव वाले या पालको के बाने पर बच्चे चरण स्पर्श करते है। ऐसे कुछ कार्य समुदाय के सहयोग से मेरे स्कूल में चल रहे हैं।

होली दीवाली मिलन----

होली दीवाली पर समुदाय और बच्चों को जोड़ने हेतु कार्यक्रमरखती हुन जिसमे बच्चे के अंतर्मन की जिज्ञासाओ का पता लगते हैं की वे चाहतें हैं बच्चे इस ख़ुशी में अपने दिल की बात रखते हैं एक बार जब हम एक बच्चे से पूछे की वो क्या बनना चाहता है तो उसके जवाब से हतप्रभ हो गए ,पाचवी कक्षा का बच्चा बोलता है की वो अच्छा इंसान बनना चाहता है । मुझे भी मेरे इस छोटे से कार्यक्रमकी सार्थकता दिखाने लगी।मुझे खुशी हुई की मेरे बच्चे समझदार हो रहे हैं

बाल-मेला----

मेरे स्कूल में हर साल बाल मेला लगता है समान उपलब्ध करने की जवाबदारी समुदाय की ही होतीं है। बच्चों के साथ खड़े होकर सामग्री विक्रय करते हैं साथ ही साथ पूरे गांव के लोग बच्चों से समान लेने आते हैं।अच्छा उत्साह होता है बच्चे खुश हो जाते हैं इस प्रकार कुछ न कुछ माध्यम से मैं बच्चों को समुदाय से जोड़े रखती हुन जिससे वे बच्चों के प्रति और शाला के प्रति सजग रहते हैं।

स्मार्ट शाला ---

अभी स्मार्ट शाला बनाने हेतु शाला में बहुत सी बैठकें रखी गयी मैंने कॉन्सेप्ट समझाया फिर राशि की बात आयी तो सहयोग करने की बात आयी सबने स्मार्ट शाला बनाने में मेरा सहयोग किया TV चंदा कर खरीदने को राजी हो गए। कोरोना काल के कारण अभी पेन्डिंग हो गया अन्यथा स्मार्ट TV आ गया होता।

सांस्कृतिक गतिविधियां---

हमारे गांव में बच्चे गुणीकलाकार है ख़ासकर छत्तीसगढ़ी गानों पर बेहतरीन प्रस्तुति देते हैं ।हमारे गांव में लीलामण्डली है जिसके कारण कला पर विशेष जोर देते है । मेरे यहां सांस्कृतिक कार्यक्रम हमेशा टॉप पर रहता है स्टेट तक भी एक बार जा चुके हैं। बहुत सुंदर प्रस्तुति होता है विशेस मौकों पर सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं शाला में भी और शाला के बाहर भी सभी का मत मस्त सहयोग रहता है।

खेलकूद ----

शाला में प्रतिवर्ष खेलकूद होते हैं यहां काम बच्चे होते हुए भी मेरी शाला संकुल प्रतियोगिता में हमेशा टॉपर रहा है चेम्पियनशिप की ट्रॉफी हमेशा हमारी हुई ।खासकर खो खो और कबड्डी मेरे बच्चे इतना बढिया खेले हैं की बयान नही कर सकती इसमे पूरा गांव वालों का सहयोग सर्वोपरि है वे अच्छा सहयोग करते है बच्चों को खेल सीखाना उन्हें बाहर जाकर खेलने हेतु प्रेरित करना और बाहर जाने पर पूर्ण सहयोग करना वहाँ भी उपस्थिति हो बच्चों को पूर्ण रूप से प्रोत्साहित करते है। मेरा समुदाय बहुत सहयोगी है । शुरू से ही मेरी शाला गांव वालो के सहयोग से चल रही है मुझे केवल इशारा बस करना पड़ता है।

शिक्षकों को प्रोत्साहित करना -

मेरे समुदाय के लोग शुरू से ही मुझे कुछ अच्छा करने के लिए प्रोत्साहित करते रहते हैं , मेरा सम्मान भी करते हैं उनकी प्रेरणा से मुझे कुछ नया करने के लिए प्रेरणा मिलती रहती है। इसी के प्रतिफल मेरी शाला में कुछ न कुछ नया होते रहता है। मेरी शाला में पालक बालक और शिक्षक का समन्वय बेहतरीन है।
मैं खुश हूँ की मैं इस शाला का हिस्सा हूँ।

शासकीय उच्चतर माध्यमिक शाला गोकुलपुर वार्ड, धमतरी

जिला-धमतरी (छ.ग.)

प्राचार्य - श्रीमती शैलजा पाण्डेय

ईमेलः- principal.ghsgokulpur@gmail.com, मो.नं.- 9827903268

विद्यालय शिक्षक एवं विद्यार्थियों के संबंध में सफलता की कहानी

शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय गोकुलपुर वार्ड, धमतरी शहर के मध्य स्थित शाला जो अपनी अनुशासन प्रियता, समयबद्धता, कार्यकुशलता एवं पढ़ाई के क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बनाये हुए हैं। इस वार्ड में शिक्षा हेतु प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय बहुत पहले खुल गये थे। लेकिन यहां पर हाई स्कूल के लिए विद्यार्थियों को दूसरे जगह जाना पड़ता था। स्वभाविक है कि इस स्थिति में जागरूक नागरिक की मदद से जिसने शिक्षा के महत्व को समझकर अपने सकारात्मक दृष्टिकोण का परिचय देते हुए यहां हाई स्कूल की नींव रखी गई।

16 जून 2011 में शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला गोकुलपुर का उन्नयन शासकीय हाई स्कूल गोकुलपुर के रूप में हुआ। इस समय हाई स्कूल का संचालन का कार्य शासकीय माध्यमिक शाला को दिया गया था। 24 दिसम्बर 2011 का वह दिन जिसमें सर्वप्रथम प्राचार्य ने कार्यभार संभाला और उन्होने कक्षा नवमीं के अध्यापन की व्यवस्था माध्यमिक शाला के कबाड़ कक्ष को साफ करवाकर सुनिश्चित की। प्राचार्य ने कार्यभार संभालते ही चारो शाला (शासकीय प्राथमिक बालक शाला, शासकीय प्राथमिक कन्या शाला, शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला, शासकीय हाईस्कूल) की प्रार्थना एवं गतिविधियां एक साथ करवाने की शुरूआत की।

सत्र 2012-13 में शाला में तीन व्याख्याता (संस्कृत, सामाजिक विज्ञान, गणित) पदोन्नति में पदस्थ किये गए तथा एक विज्ञान शिक्षक शाला प्रबंधन एवं विकास समिति द्वारा मानदेय पर नियुक्त किया गया। गणित व्याख्याता के द्वारा अंग्रेजी और गणित तथा संस्कृत व्याख्याता के द्वारा हिन्दी और संस्कृत का अध्यापन करवाया गया। अभी तक शाला भवन नहीं होने के कारण माध्यमिक शाला में स्थानाभाव के कारण शासकीय प्राथमिक कन्या शाला के एक कक्ष में कक्षा दसवीं का अध्यापन करवाया गया। इसी वर्ष ICT बूट मॉडल योजना के अंतर्गत विद्यार्थियों को कम्प्यूटर शिक्षा हेतु 2013 में कम्प्यूटर प्राप्त हुए। इसी सत्र से शाला में सर्वप्रथम वार्षिकोत्सव एवं पुरूस्कार विवरण प्रारंभ किया गया।

सत्र 2013-14 के आरंभ में शाला के भवन का निर्माण का कार्य अधूरा था। इसलिए इस सत्र भी शाला का संचालन पूर्वानुसार किया गया। इस वर्ष विभिन्न गतिविधियों में जिलास्तर, जोनस्तर, राज्यस्तरीय प्रतियोगिताओं में अपनी प्रतिभागिता सुनिश्चित की। कक्षा दसवी के एक विद्यार्थी का चयन राष्ट्रस्तर पर कुश्ती के लिये हुआ। फरवरी 2014 को नवनिर्मित हाईस्कूल का शाला भवन अधिग्रहण किया गया और शाला में फर्नीचर आना प्रारंभ हुआ। इसके पश्चात् शाला अपने भवन में संचालित होने लगी।

सत्र 2014-15 में एक विज्ञान व्याख्याता की नियुक्ति हुई लेकिन कुछ महिने बाद से ही वह मातृत्व अवकाश पर चली गई। शाला की सुन्दरता बढ़ाने के लिए प्राचार्य के द्वारा काफी प्रयास किये गये। शाला भवन के सामने का मैदान समतलीकरण करने हेतु प्राचार्य के काफी प्रयास से नगर निगम के द्वारा कराया गया। इस सत्र में शाला में हाई स्कूल के कक्षा 10वीं का परिणाम शहर की समस्त शासकीय शालाओं में सबसे अधिक

रहा। जनवरी 2016 में हिन्दी व्याख्याता पदोन्नति से कार्यभार ग्रहण किया। इस वर्ष व्यापम की परीक्षा का केन्द्र बनाया गया।

हर सत्र में विद्यालय अपने उत्कृष्ट प्रदर्शन, परिणाम एवं अनुशासन के लिये बढ़ता रहा। उस स्वर्णिम दिन की स्मृति आज भी इस क्षेत्र के जागरूक नागरिकों के मानस पटल पर अंकित होगी। जिन्होने इस वार्ड में हाई स्कूल की नींव रखी। जिसका सत्र 2017-18 में उन्नयन शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय गोकुलपुर वार्ड, धमतरी के नाम से गौरवान्वित हुआ। इसी सत्र में तीन व्याख्याता (न.नि.) एवं सहायक ग्रेड-03 पदस्थ हुई। सत्र 2016-7-18 में हमारी संस्था को कलेक्टर धमतरी द्वारा E-Class Room के लिए चयनित किया गया। एवं E-Class के लिए प्राजेक्टर लेपटाप का सेटअप कर के दिया गया जिसका उपयोग विद्यार्थियों के अध्यापन हेतु किया जाता है। सत्र 2018-19 में दो व्याख्याता पदोन्नति से शाला में पदस्थत हुए । सत्र 2019-20 में हमारी संस्था को राज्यस्तर द्वारा दो स्मार्ट क्लास के सेटअप के लिए चयनित किया गया। जिसके सेटअप की कार्यवाही वर्तमान में जारी है।

शाला में प्रतिवर्ष अनेक गतिविधियां करवाई जाती हैं। जिससे विद्यार्थियों का सर्वांगिण विकास हो। शाला में वृक्षारोपण, विज्ञान की गतिविधियां, कैरियर काऊन्सिलिंग, बालिकाओं की सुरक्षा, जिला विधिक साक्षरता, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियां करायी जाती हैं। हमारी शाला के लिए यह गौरव का विषय है कि जिला एवं सत्र न्यायालय धमतरी द्वारा जिला विधिक साक्षरता के अंतर्गत विभिन्न विधिक गतिविधियों हेतु धमतरी विकासखंड से हमारी शाला का चयन सत्र 2017-18 में किया। सत्र 2018-19 में इसके अंतर्गत विभिन्न गतिविधियां भाषण, वाद-विवाद, रंगोली आदि कराई गई जिसमें हमारी संस्था के विद्यार्थियों ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लेकर स्थान प्राप्त किया। जो हमारी शाला के लिए गौरव का विषय हैं। पूर्व कलेक्टर श्री सी.आर. प्रसन्ना जी की पहल पर तमिलनाडु से आये विशेषज्ञ से जापानी तकनीक से पौधे रोपन सीड बाल विधि सिखाया गया। जिला शिक्षा अधिकारी के आग्रह पर प्राचार्य के मार्गदर्शन में कक्षा दसवी के सभी विषय का ब्लू-प्रिन्ट के आधार पर प्रश्नों का संकलन तैयार करवाया गया। जिसे पी.डी.एफ. बनाकर जिले एवं राज्य में प्रसारित किया गया। सत्र 2018-19 में पुलिस अधिक्षक धमतरी द्वारा स्टूडेन्ट पोलिस कैडेट (SPC) के संचालन के लिए हमारी संस्था का चयन किया। जिले में चयन कुल पांच संस्था में हमारी संस्था एक हैं। जो कि निश्चित ही हमारी संस्था के कुशल संचालन, अनुशासन का परिणाम हैं। जिसके कारण हम विभिन्न जिलास्तरीय क्रियाकलाप हेतु चयनित किए जाते हैं। शाला में नवाचार, कार्ययोजना, शैक्षिक गतिविधियां, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियां समस्त कार्यालयीन कार्य प्राचार्य के निर्देशानुसार सम्पन्न होते हैं। शाला परिवार के सभी शिक्षक एक परिवार की तरह कार्य करते हैं और शाला के संचालन में बढ़कर चढ़कर हिस्सा लेते हैं।

शाला अपने 10 वर्ष के कार्यकाल में अधिक सुदृढ़ और अग्रसर होते हुए आज अपनी गौरवशाली परम्परा का निर्वहन कर रहा हैं। कुछ वर्ष पूर्व इस विद्यालय में शिक्षकों की काफी कमी थी फिर भी अभाव में भी प्रभाव दिखाने में यह विद्यालय सफल रहा। सत्र 2018-19 में कक्षा दसवीं की छात्रा ने जिला स्तर पर अपना स्थान बनाया। बोर्ड परीक्षा के साथ-साथ व्यापम की परीक्षाऐं, विभिन्न प्रकार के विकासखंड स्तरीय प्रतियोगिताएं इत्यादि शासकीय शैक्षणिक कार्यक्रम का संचालन सफलतापूर्वक होता हैं।

सत्र 2019-20 में हमारी शाला के विद्यार्थी के द्वारा बाड आपदा से सुरक्षा हेतु मार्क ड्रील किया गया जिसमें आपदा प्रबंधन से अवगत कराते हुये सुरक्षा हेतु तैयार रहने को प्रेरित किया गया।

हमारी शाला में राष्ट्रीय विधि सेवा प्राधिकरण नई दिल्ली के मासिक कलेडर के अनुसार लीगल लिटेरेसी क्लब में जिला विधिक प्राधिकरण के अंतर्गत कई प्रतियोगिताएं का आयोन किया जाता है।

सत्र 2019-20 में बोड परीक्षा में कक्षा 12वी. का प्रतिशत 89.95 तथा कक्षा 10वी. का प्रतिशत 87.71 रहा ।

सत्र 2020-21 में राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस के तहत शाला के विद्यार्थी का राज्य स्तरीय में चयन हुआ तथा छ.ग. राज्य अक्षय ऊर्जा विकास प्राधिकरण क्रेडा के द्वारा ऑनलाईन स्लोगन प्रतियोगिता में प्रथम एवं चित्रकला में तृतीय स्थान प्राप्त हुआ । इस तरह यह शाला अपनी उज्जवल भविष्य की ओर आगे बढ़ रही हैं। शहर में स्थित यह विद्यालय हम सबका गौरव हैं।

शासकीय प्राथमिक शाला लवनबंद जिला बलौदाबाजार (छ.ग.)

प्रधानपाठक - श्रीमती टिकेश्वरी पटेल

ईमेल- tikeshwaripatel53@gmail.com, मो.नं.- 8889012201

---

1. सर्वोत्तम अभ्यास/गतिविधियों की जानकारी -

मेरा नाम श्रीमती टिकेश्वरी पटेल है। मैंने 16 दिसम्बर सन 2010 को शासकीय प्राथमिक शाला लवनबंद में प्रधान पाठक के पद पर कार्यभार ग्रहण किया।

इस विद्यालय में मै जब आई तब विद्यालय अहाता विहीन था। अध्यापन कक्षो की भी कमी थी। विद्यालय स्टॉप भी विभिन्न शासकीय कार्यालीन क्रियाकलापों का संपादन विद्यालय प्रांगण के खुले वातावरण मे ही करते थे। अर्थात् अध्यापन कक्ष की कमी के साथ ही साथ कार्यालय कक्ष की कमी बनी हुई थी।

वहॉ लगभग एक महीने तो मुझे विद्यालय परिवार, परिवेश, वहॉ के जनमानस अर्थात् समुदाय को समझने मे लगा। मैंने संस्था की प्रत्येक मूलभूत समस्याओं, क्रियाकालापों का सूक्ष्मतम अध्ययन तथा चिंतन मनन किया।

- विद्यालय स्टॉप का बहुत ही अच्छा सहयोग मिला। सभी शिक्षक-शिक्षिकाएं सहयोगात्मक स्वभाव के थें। विद्यालय की मूलभूत आवश्यकताओं, कमियों, समस्याओं का वृहद विश्लेषण करने के पश्चात मैने शाला प्रंबधन एवं विकास समिति से भी सतत् रूप से संपर्क बनाए रखा।

विद्यालयीन समस्यों के निराकरण हेतु मैंने विद्यालय के शिक्षक - शिक्षिकाओ के माध्यम से धीरे - धीरे समुदाय से जुड़ते हुए बच्चों एवं विद्यालय को स्वयं को समर्पित कर दिया। बच्चों के प्रति स्नेह, समर्पण एवं मेरी कार्य शैली देखकर विद्यालय स्टॉप एवं समुदाय के लोग ही बहुत ही प्रभावित हुए।

मैनें शाला एवं समुदाय से परस्पर समन्वय स्थापित करते हुए कार्य प्रारंभ किए। मुझे बस इसी पल की प्रतीक्षा थी। मैनें शाला प्रबंधन एवं विकास समिति की बैठक लेकर उन सभी को विश्वास मे लेते हुए बच्चों की नियमित उपस्थिति बढ़ाने हेतु सतत् पालक संपर्क करने का शंखनाद किया। पालक संपर्क के दौरान मुझे अनुभव हुआ कि, बालिकाओं को पालक अक्सर घरेलू कार्यो हेतु घर पर रोक ही लेते थे, जैसे -छोटे भाई-बहनों की देखभाल, पालतू जानवरों की देखरेख हेतु, रसोई कार्य संभालने हेतु ।

यही कारण था की वहॉ नामांकन तो शत्-प्रतिशत था किन्तु, औसत उपस्थिति दर संतोष जनक नही था । मैने परिस्थितियों को भांपते हुए बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु वही पर ही कमर -कस लिया । विद्यालय की दर्ज संख्या शत्-प्रतिशत करने के लिए एवं बालिकाओं में शिक्षा के प्रति जागृत करने हेतु घर - घर जाकर जन जागृति का माहौल पैदाकर उन्हे प्रेरित किया ।

स्थानीय परिवेश मे सामाजिक सद्भाव के माध्यम से राष्ट्रीय एकता बनाए रखने हेतु सभी धर्म, जाति एवं समाज के सामाजिक कार्यो के आमंत्रण पर उपस्थित होकर अपनी सामाजिक दायित्वों का निर्वहन करती गई।

- विद्यालय के गुणत्वापूर्ण शिक्षण के साथ ही साथ विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम, राष्ट्रीय पर्व, स्थानीय पर्व, शैक्षिक साहित्यक, सामाजिक एवं शालेय क्रीडागत कार्यक्रमों का वृहद आगाज किया गया।

ग्राम लवनबन के अत्यंत ही गरीब अशिक्षित पालकों को शिक्षा के महत्व को समझाते हुए स्व प्रेरित करके उनके नौ निहालों को शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ा । उस दौरान साक्षर भारत कार्यक्रम में भी अपना योगदान दिया।

पलायनित पालकों के वे बच्चे, जो नियमित विद्यालय आने हेतु अपने रिश्तेदारों, पड़ोसियों के यहाँ छोड़ दिये गए थे वैसे बच्चों को शैक्षणिक सामग्री एवं स्वास्थ्यगत सुविधाएँ उपलब्ध कराने का मैनें स्वयं बीड़ा उठाया, ताकि बच्चों के सीखने सिखाने मे अवरोध उत्पन्न न हों।

- ग्राम पंचायत लवनबन, शाला प्रबंधन समिति लवनबन से परस्पर समन्वय स्थापित करते हुए शासकीय उच्च अधिकारियों से सतत् संपर्क करते हुए विद्यालय चहारदीवारी, दो नये अध्यापन कक्ष, एक प्रधान पाठक कक्ष, का निर्माण करवाया गया।

बारिश होने पर शाला प्रांगण तालाब मे तब्दील हो जाता था, इससे निजात पाने हेतु मैदान समतलीकरण करवाया गया। सभी अध्यापन कक्षों मे रैम्प बनवाया गया।

विभिन्न नवाचार

 ग्राम लवनबन के विद्यायाल मे अध्ययनरत विद्यार्थियों मे व्यक्तिगत एव सामुदायिक स्वच्छता के माध्यम से व्यवहार परिवर्तन कर जन जागरूकता लाने हेतु मैंनें विभिन्न प्रकार के नवाचारो का अंजाम दिया। हमारे सामने पुरे समुदाय को इस प्रकिया मे जोड़ने हेतु अनेक दिक्कते आई, किन्तु हमारे महापुरूष स्वामी विवेकानंद जी का विचार - **"उठो, जागो और तब तक मत रूको जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो जाए"** हमने अपने अंतर्मन मे ऐसे ही विभिन्न महापुरूषो के विचार रूपी बीजों का रोपण कर लिया था।
अतः अपने लक्ष्य से भटकने का प्रश्न ही नही था।

1. गुलाब (बालिका), कमल (बालक) चयन करनाः-

इस नवाचार के अंतर्गत दैनिक क्रियाकालाप के रूप में प्रार्थना सभा मंच पर साफ - सुथरे गणवेश युक्त बच्चों को गुलाब (बालिका), कमल (बालक) चयन करना। स्वच्छ गणवेष, बेल्ट, टाई, जूता, मोजा मे सुसज्जित बालक एवं बालिका को क्रमशः कमल एवं गुलाब के रूप में चयनित करके अक्षत, रोली से तिलक करके करतलध्वनि से स्वागत करना एवं सम्मान देना।

2. ज्योति (बालिका), कलष (बालक) चयन करनाः-

इस नवाचार के अंतर्गत प्रार्थना सभा मंच पर बच्चों का जन्मदिन दैनिक रूप से मनाना। इस नवाचार को क्रियान्वित करने हेतु प्रतिमाह हमारी शिक्षिकाओं द्वारा वर्तमान माह में जन्म लिए छात्र - छात्राओ की

जानकारियॉ बालकान से देखकर सूचीवद्ध कर सूचना पटल पर चस्पा कर दिया जाता था, जो आज भी अनवरत रूप से जारी है।

बाल केबिनेट के शाला नायक द्वारा उन बच्चों को एक दिन पूर्व सूचित कर दिया जाता है। कि कल प्रार्थना सभा मे आपका जन्मदिन मनाया जाएगा।

इसके अंतर्गत जिस बालिका का जन्म दिन मनाया जाता है, वह उस दिन शाला की ज्योंति होती है। तथा जिस बालक का जन्म दिन मनाया जाता है, उस दिन शाला का कलश होता है। उक्त दिवस उन बच्चों का नाम गुलाब, कमल, ज्योंति, कलश से संदर्भ मे सूचना पटल पर लिखकर सम्मान दिया जाता है। ज्योति-कलश विद्यार्थियों का आरती तिलक पुष्प वर्षा कर चाकलेट खिलाकर तालियों की गड़गड़ाहट से स्वागत किया जाता है फिर हम सभी के चरण स्पर्श करते है। हम संस्था प्रमुख होने के नातें उनके लिए मंगल आशीष की कामना प्रार्थना स्थल पर करते है ।

3. नारा सुविचार बोलनाः-

इसके अंतर्गत प्रार्थना सभा मे बच्चे स्वस्फूर्त हमारे महापुरूषों द्वारा कहीं गई विचारों को सभी के सामने साझा करते है। उन्हे भी करतल ध्वनियों से सम्मानित किया जाता है। इससे विद्यार्थियों मे व्याप्त भय दूर हुआ, तथा उनमे अभिव्यक्ति कला का विकास होने लगा । सभी बच्चे मुखरित होने लगे।

4. बल सदन (केबिनेट)गठन, शपथ ग्रहण, प्रभारी नियुक्त, जिम्मेदारियों का निर्वहनः-

इस नवाचार के अंतर्गत अध्ययरत बच्चों की कार्यक्षमता वैज्ञानिक सोच, कार्य करने की शैली इन विभिन्न गुणों का गहन विश्लेषण कर उन बच्चों से बाल सदन (केबिनेट)का गठन किया जाता है। तथा उनमे से विभिन्न पद उन्हें सौपकर जिम्मेदारियों को अवतगत कराते हुए शपथ ग्रहण करवाया जाता है।

ये पद शाला नायक, उपशालानायक, स्वच्छता प्रभारी, स्वच्छतादूत से बाल पुस्तकालय प्रभारी, रीड़िग कार्नर प्रभारी, अनुशासन प्रभारी, जनसंपर्क प्रभारी, बागवानी प्रभारी, सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रभारी आदि ।

इससे बच्चों मे नेतृत्वक्षमता एवं स्वविवेंक से निर्णय लेने के कौशल विकसित होने लगे।

5. प्रिंट रिच वातावरण निर्माण :-

बच्चों के सीखने सिखाने मे स्वस्थ एवं रोचक वातावरण का अत्यंत गहरा प्रभाव पड़ता है, इस मनोवैज्ञानिक तथ्य (सिद्धांत) को ध्यान मे रखते हुए मैने स्वयं से शालेय सौन्दर्यीकरण के अन्तर्गत शिक्षण को रोचक एवं प्रभावशाली बनाने हेतु सभी अध्यापन कक्षों कों कंक्षांस्तरानुसार शैक्षणिक सामग्रियों से युक्त प्रिंट रिच वातावरण का निर्माण करवाया । सभी अध्यापन कक्षों का नामकरण हमारे प्राचीनकालीन "भारतीय ऋषि गुरूओं" के नाम से किया गया है, ताकि वे अपनी प्राचीन संस्कृतियों से परिचित हो सकें।

6. बाल देव भवः :-

सभी बच्चों मे ईश्वर को मैने देखा उनके निश्चल मुस्कान, बिखरे बाल बरबस ही मुझे उनकी माताओं की मजबुरियों की किस्से सुना जाते थे, मैने इससे निपटने हेतु सभी कक्षाओं मे दर्पण, कंघी, नेलकटर आदि की व्यवस्था उनके पहूंच स्तर पर किए। नाखून प्रायः बाल सदन के स्वच्छता प्रभारी भैया - दीदी काट देते थे। इस प्रकार मेरी विद्यालय रूपी बगिया मे रोज ताजे नए फूल पुष्पित एवं पुलकित होने लगे। सभी माताओं का श्रद्धा एवं विश्वास मुझ पर बनने लगा । मै स्वयं भी बच्चों का बाल संवार देती थी।

7. वृक्षरोपण के माध्यम से पर्यावरणीय जागरूकता :-

नन्हे -नन्हे छोटे हाथो को पौध-रोपण के कार्यो मे जोड़कर अपनी रत्नगर्भा धरती माता की रक्षार्थ पर्यावरणीय जागरूकता उत्पन्न करने हेतु वृक्षारोपण कर शालेय परिसर का श्रृंगार किया गया । इस हेतु समस्त छात्र - छात्राओं, शिक्षक शिक्षिकाओं, जन समुदाय सभी को अभिप्रेरित कर वृहद वृक्षारोपण एवं फूलों की क्यारियॉ तैयार की गई । रोपित सभी पौधो को सुरक्षा प्रदान करने हेतु ट्री गार्ड की व्यवस्था स्वयं के व्यय से किया गया।

8. उत्कृष्ट शिक्षण व्यवस्था :-

यहॉ कक्षा मे बच्चो को समूह मे विभाजित करके गतिविधियों के माध्यम से खेल- खेल में ही सीखाया जाता है, तथा गतिविधियों के माध्यम से ही सतत् एवं व्यापक आकलन किया जाता है। बच्चो का उपचारात्मक शिक्षण भी किया जाता है। कठिन अवधारणाओं को रोचक तरीके से सिखाने हेतु विभिन्न क्रियाकलाप जैसे, गीतो की रचना कर, कहानी लेखन कर एवं मनोरंजन करते हुए सिखाया जाता है। सामान्य ज्ञान, शब्द रचना आदि प्रतियोगिताएँ आयोजित किया जाता है ।

9. बालिका षिक्षा को बढ़ावा देना :-

यहॉ पालको द्वारा घरेलू कार्यो हेतु अधिकांश बेटियों को घर पर ही रोक लिया जाता था, इसके लिए मैने उन्हे शाला तक नियमित रूप से लाने हेतु विविध कार्यक्रम करवाए। जैसे - मॉ - बेटी सम्मेलन, माता उन्मुखीकरण, मेहंदी -लगाओ, रंगोली - सजाओं, फुगड़ी खेलो, "कलश दौड़" प्रतियोगिता आदि।

10. "गुड टच - बेड टच" की जानकारीः-

सभी शिक्षक -शिक्षिकाओं एवं हमारे द्वारा हमारे विद्यार्थियों को इस कलयुगी दुनिया मे व्याप्त बाल यौन शोषण से सुरक्षित रखने हेतु 'गुड़ टच - बेड़ टच" से अवगत कराया जाता है।

11. बाल गणेश (मुस्कान) पुस्तकालय की स्थापना :-

बच्चों मे भाषायी पठन कौशल विकसित करने के उद्देश्य से एक छोटे से बरामदा- नुमा कक्ष में कक्षा 1ली से कक्षा 5वीं तक स्तरानुसार सचित्र रंगीन बाल गणेश पुस्तकालय की स्थापना की गई।

चूकि "आदि देव गणेश जी" बच्चों के विद्या दाता होते है, उनमे वे बल बुद्धि विनम्रता व विवेक का गुण भरते है। कुछ समय पश्चात "रूम टू रीड" के माध्यम से छ.ग. शासन की महत्वपूर्ण योजनान्तर्गत इसे मुस्कान पुस्तकालय में परिवर्तित किया गया। बच्चें बाल पुस्तकालय प्रभारी शिक्षक से पुस्तक मांगकर पढ़ने हेतु घर भी ले जाते है, तथा दैनिक पुस्तकालय समय सारणी अनुसार सभी कक्षाओं से बच्चें पुस्तक पढ़ने पुस्तकालय अवश्य जाते है।

12. प्रथमोपचार बाक्स की सुविधा :- विद्यालयीन समयावधि में अचानक चोट लग जाने अथवा दुर्घटना हो जाने की स्थिति में हमारी शाला में प्राथमिक उपचार बाक्स की व्यवस्था भी हमने कर रखी है। त्वरित मरहम पट्टी सेवा हमारे द्वारा बच्चों को दी जाती है ।

13. सामान्य सिलाई सामग्री सुविधा :-

हमारे विद्यालय मे छात्र नामांकन लगभग 200/- की थी, ऐसे मे आए दिन किसी न किसी बच्चे के बटन टूट जाते थे, माता -पिता भी इस पर अधिकांशत: ध्यान नही देते थे, बच्चे वैसे ही गणवेश पहनकर शाला आ जाते थें, ऐसे समस्याओं से निपटने के लिए हमने विद्यालय मे ही 50/- रूपये जैसे एक छोटी सी राशि खर्च करके "सिलाई सामग्री बाक्स" की व्यवस्था की। इस हेतु कक्षा पॉचवी की बालिकाओं को बटन टांकना, साधारण सुई से सिलाई करना बताया गया, जिससे विद्यार्थियों में जीवनोपयोगी कौशलों का विकास होता गया । इस नवाचार के माध्यम से सभी सामग्रियों की उपलब्धता होने पर हम सभी शिक्षिकाएं भी बच्चों के टूटे बटन स्वतः टॉक देते है, जिससे छात्र -छात्राएं हमसे लगाव महसूस करते है, एवं स्वयं को गौरवान्वित महसूस करते है।

14. "स्वच्छता ही सेवा एवं हस्त प्रक्षालन कार्यक्रम"

"स्वच्छ भारत अभियान" के अंतर्गत बच्चों मे स्वच्छ आदतों का विकास करने हेतु मेरे द्वारा भाषा छत्तीसगढ़ी मे लोकगीत, कविता एवं नारा लिखकर रैली निकालकर जन जागरूकता जगाई गई । बच्चों को स्वच्छता से अवगत कराने हेतु "स्वच्छता दूत" को साथ लेकर शाला परिसर एवं आसपास सघन सफाई अभियान चलाया गया। मध्यान्ह भोजन को स्वसहायता समूह की महिलाओं को भी स्वच्छ वातावरण मे साबुन से हाथ धोकर ही भोजन बनाने हेतु निर्देशित किए गए । हैण्डपंप के आस-पास नियमित सफाई हेतु सफाई कर्मचारी को निर्देशित किया गया । व्यक्तिगत स्वास्थ्य एंव स्वच्छता हेतु प्रतिमाह "हस्त प्रक्षालन प्रशिक्षण" कार्यक्रम अनिवार्य रूप से करवाया जाता है। अति अल्प राशि से शाला पर ही हैण्डवाश तैयार करने हेतु बच्चों को हमारे द्वारा करके भी सिखाया गया।

15. "लर्निंग कार्नर + स्वयं करके सीखो"

बालकेन्द्रित शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु बच्चे स्वयं करके देखे और सीखे, इस हेतु शिक्षकों द्वारा प्रोफेशनल लर्निंग कम्यूनिटी के माध्यम से विभिन्न सहायक सामग्री निर्माण किया जाता है। इस कार्य में बच्चों की भी सहभागिता अनिवार्य रूप से रहती है।

16. वार्षिक शालेय क्रीडा प्रतियोगिता एवं सहज योग, योग, व्यायाम का आयोजनः-

"स्वस्थ तन में ही स्वस्थ मन का वास होता है" अर्थात् विद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, नैतिक, चारित्रिक एवं व्यवहारिक ज्ञान प्रदान करने हेतु यहॉ प्रति सप्ताह शनिवार को सहज योग, योग, व्यायाम एवं विभिन्न खेलो को आयोजन किया जाता है। बालसभा का आयोजन किया जाता है, जहॉ सभी छात्र -छात्राएं अपनी प्रतिभा का मंचन करते है। इस प्रकार यहाँ बच्चों के सर्वांगीण विकास हेतु वार्षिक शालेय क्रीड़ा

प्रतियोगिता का आयोजन भी करवाया जाता है । विजेता विद्यार्थियो को पुरस्कार देकर पुनर्बलित एवं प्रोत्साहित किया जाता है। हमारे द्वारा विद्यालय में विविध प्रकार के खेल सामग्री की व्यवस्था की गई है। पुस्तकालय एवं अध्यापन कक्षों में लुडो एवं तीरी पासा भी फर्श पर अंकित किए गए है। इससे बच्चे गिनती की अवधारणा भी सीख सकते है।

17. सृजनात्मकता का विकास :-

बच्चो मे छिपी हुई प्रतिभा को निखारने हेतु यहाँ विविध आयोजन शालेय अकादमिक वर्ष के साथ- साथ ग्रीष्म कालीन भी होते है।

18. बाल निर्धन कोष की स्थापना :-

बच्चों मे त्याग, दान एवं मितव्ययता के जीवन विद्या कौशलों को विकसित करने हेतु शाला प्रबंधन एवं विकास - समिति को बैठक मे प्रस्ताव पास कराकर विद्यालय मे बाल निर्धन कोष की स्थापना की गई । इसका मुख्य उद्देश्य निर्धन छात्र/छात्राओं को कापी, पेन आदि शैक्षणिक सामग्री उपलब्ध कराना है ताकि बच्चों मे मदद करने के गुणों का विकास हो सके।

19. दैनिक सर्वधर्म प्रार्थना एवं सरस्वती वंदना :-

अध्यापन के पूर्व दैनिक रूप से सर्वधर्म प्रार्थना एवं सरस्वती वंदना की जाती है।

- **पानी की उपलब्धता -:** यद्यपि विद्यालय में स्वयं का हैण्ड़पंप था, किंतु पानी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं था। ऐसे में शौचालय, मूत्रालय, बागवानी, मध्यान्ह भोजन हेतु पानी की कमी हो जाती थी। इस समस्या का समाधान हेतु हमने वाटर हारवेस्टिंग सिस्टम निर्माण करवाया तथा पी .एच .ई. विभाग से निवेदन करके सोलर डयूल लगवाया, एवं बच्चों की हाथ धुलाई हेतु बहुनल टंकी निर्माण करवाया । अब सभी बच्चों को पानी की उपलब्धता पर्याप्त है। हमारी शाला के बच्चे नित्य रूप से मध्यान्ह भोजन के पूर्व साबुन से हाथ धोकर कतारबद्ध बैठकर भोजन मंत्र करते हैं, तत्पश्चात स्वसहायता समूह की दीदी भोजन परोसती है। प्रतिदिन दो शिक्षिकाएं भोजन परोसते समय पर्यवेक्षण करती है। हमारी शाला के विविध क्रियाकलापों मे विकासखण्ड़ स्तरीय एवं जिलास्तरीय अधिकारियों का आगमन होता था, इस दौरान उन्हें जो-जो भी कमियां नजर आती थी, उन्होने साझा किया। हम उन कमियों को दूर करने हेतु सतत् प्रयत्नशील थे । डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम गुणवत्ता अभियान के दौरान हमारी भी संस्था में गुणवत्ता परिक्षण हेतु विभिन्न विभागों के कर्मचारी, अधिकारिगणों का तांता लग गया था। वे सभी

आलोचना समालोचना करते हुए हमारे द्वारा किए जा रहे कार्यों की समीक्षा करते गए । हमने कबीर दास जी की वाणी दोहा अपने हृद्यपटल पर समाहित कर रखा था।

"निदंक नियरे राखिए, आंगन कुटी छबाय ।
बिनु पानी साबुन बिना, निर्मल करे सुहाय ।।"

समीक्षा के माध्यम से मिलने वाली कमियों को दूर करते गया। राष्ट्रीय गुणवत्ता अभियान के दौरान छ.ग. शासन पंचायत सचिव जी का निरीक्षण हेतु हमारे विद्यालय में आगमन हुआ, उन्होने विद्यालय हित में हमारे द्वारा किए गए सकारात्मक कार्यो की जमकर तारीफ की तथा हमारी पीठ थपथपाकर शाबाशी देते हुए कुछ दिनों के पश्चात तीन झूला भेंट किए । बलौदाबाजार के तात्कालीन कलेक्टर महोदय जी द्वारा खनिज न्यास मंड़ल मद से 52 से.मी. साइज की एक रंगीन टी. वी. भेंट स्वरूप विद्यालय को दिया गया । हम सभी शाला परिवार खुशी से गद् - गद् हो गए।

- विद्यालय मे प्रतिवर्ष गणतंत्र पर्व को बहुत ही धूम धाम से मनाया जाता है। इसी दिन पुरे जन-समुदाय की उपस्थिति में हमारी संस्था में अध्ययनरत गत वर्ष के कक्षा पांचवी के छात्र छात्रों को उनके द्वारा विद्यालयीन अकादमी वर्ष में किये गए उत्कृष्ट योगदान के आधार पर प्रोत्साहन "षष्ठ क्षेत्र सम्मान" स्मृति चिन्ह एवं प्रमाण पत्र सहित -प्रदान किए जाते है। यह सम्मान 1.**प्रतिभावान 2.नियमितता 3. अनुशासन 4.स्वच्छता 5. खुलकूद एवं क्रीडा 6.सांस्कृतिक कार्यक्रम** इन क्षेत्रों में उनके उतकृष्ट योगदान को देखते हुए प्रदान किया जाता है। इस प्रोत्साहन सम्मान से अन्य छात्रछात्राऐ भी विद्यालयीन - कार्यक्रमों मे बढ़ चढ़कर हिस्सा लेते हुए सच्ची लगन, पूर्ण निष्ठा एवं बेहद ईमानदारी पूर्वक बाल सदन (कैबिनेट) कर्त्तव्यो का निर्वहन करने मे कोई कसर नहीं छोडते हैं। ये पुरस्कार के क्षेत्र इस प्रकार से है।
- प्राथमिक शिक्षा पूर्ण करके जो भी विद्यार्थी अन्य विद्यालयों में उच्च प्राथमिक स्तर की शिक्षा ग्रहण करने गए है, वे आज भी मेरे संस्था द्वारा रोपित नैतिक जीवन-मूल्य संस्कार को अपने चरित्र में आत्मसात करते हुए शिक्षण के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का परचम लहरा रहे है |

- विद्यालय द्वारा किये जा रहे प्रशंसनीय कार्यों का अवलोकनार्थ अन्य विद्यालयों के शिक्षक साथी भी हमारी शाला पहुँचने लगे, तथा निरन्तर रूप से निरीक्षण हेतु अधिकारीगण भी आकस्मिक पहुँचने लगे , इसका एक अप्रत्यक्ष लाभ हमें मिला, हमारे सभी शिक्षक साथी निर्धारित समय पर शाला पहुँचने लगे।

3.1 शीर्षक शासकीय प्राथमिक शाला लवनबन के शाला प्रशासन में सुधार

3.2 परिचय जिला मुख्यालय बलौदाबाजार - भाटापारा से लगभग 8 किलोमीटर की दूरी पर लवनबन - कसड़ोल मार्ग पर हमारा स्कूल शासकीय प्राथमिक शाला लवनबन अवस्थित है। जब मैंनें सन् 2010 मे उस विद्यालय में कार्यभार ग्रहण किया तब, वह ग्राम पंचायत डोटोपार का आश्रित ग्राम था । उस वक्त वहां की आबादी लगभग 1600 के आसपास रही होगी । यह विद्यालय सन् 1963 से संचालित हैं यहां का संकुल केन्द्र पनगांव विकासखण्ड बलौदाबाजार है।

मेरा नाम श्रीमती टिकेश्वरी पटेल है, मैंनें यहां 16 दिसम्बर सन् 2010 को प्रधान पाठक के पद पर कार्यभार ग्रहण किया । वर्तमान मे यहां कुल 8 शिक्षक -शिक्षिकाएं है। इनमे 2 पुरूष शिक्षक एवं 6 महिला शिक्षकाएं है। जून 2010 से एक सफाई कर्मचारी की नियुक्ति शासन द्वारा दी गई है। सफाई कर्मचारी श्री बजरंग पटेल शालेय स्वच्छता का पूरा ध्यान रखता है, तथा निष्ठापूर्वक ईमानदारी से अपने कार्यो को संपादित करता है।

1. मूलभूत जानकारियॉः-

दर्ज संख्याः- वर्तमान समय यहां छात्र नामांकन 175 है, जिसमे 90 बालक तथा 85 बालिकाएं है।

2. आधार भूत संरचनाः-

1. पेयजल - हैण्डपंप एवं सोलर ड्यूल है।
2. शौचालय - CWSN, बालक, बालिका हेतु पृथक पृथक उपलब्ध है।
3. अहाता - अहाता निर्माणधीन हैं।
4. विद्युतीकरण - विद्युतीकरण हैं।
5. किचन शेड - किचन शेड उपलब्ध है।

3. सम्पूर्ण विद्यार्थियों की स्वच्छताः- यहां प्रत्येक सोमवार एवं मंगलवार को शारीरिक स्वच्छता की जॉच "बाल सदन" केबिनेट) के द्वारा तथा शिक्षिकाओं के द्वारा किया जाता है ।

4. विद्यार्थियों की उपस्थिति :- अब यहां विद्यार्थियों की उपस्थिति संतोषप्रद रहती है। प्रत्येक माह शिक्षकों द्वारा पालक संपर्क किया जाता है।

5. अध्यापक कि उपस्थिति :- यहां पदस्थ सभी शिक्षक -शिक्षिकाएं की उपस्थिति भी शत प्रतिशत रहती है। विगत कई वर्षो तक के शिक्षकों के अवकाश का निरीक्षण करने के दौरान यह तथ्य सामने आयी है। यहां अवकाश पंजी अनिवार्य रूप से आज भी संधारित किए जाते है।

6. नियमित बैठकें :- यहां प्रत्येक महिने की द्वितीय सप्ताह को शाला प्रबंधक एवं विकास समिति की बैठक होती है। शाला प्रबंधन समिति में वर्तमान में कुल 8 महिला एवं 8 पुरूष सदस्य हैं।

प्रत्येक माह के प्रथम शनिवार को स्वसहायता समूह की बैठक होती है, जिसमे छात्र -छात्राओं को साफ सुथरा वातावरण में भोजन तैयार कर स्नेह पूर्वक परोसने हेतु निर्देशित किया जाता है । इसी प्ररकार बाल सदन, विद्यालय स्टॉप एवं शिक्षक - पालक बैठक का आयोजन कर विद्यालय की विभिन्न समस्याओं का निराकरण किया जाता है।

7. शिक्षण गतिविधियॉ एवं परिणाम :- यहां शिक्षण में विविध नवाचारों का प्रयोंग किया जाता है। जिससे अध्ययन -अध्यापन में नवीनता बनी रहती है। सभी शिक्षकगण अनुभवी एवं प्रशिक्षित है। पढाई में पिछड़े छात्र -छात्राओं को उपचारात्मक शिक्षण के माध्यम से सिखाया जाता है। छात्र -छात्राओं के स्तरानुकुल सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता भी विभिन्न अवसरों पर कराए जाते है। यहां का परीक्षाफल शत प्रतिशत रहता है।

3.3 उद्देष्यः- मेरा उद्देश्य सदैव अपनी कर्मभूमि (पदांकित गांव) में बच्चों को शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ते हुए उन्हे स्वस्थ एवं स्वच्छ वातावरण में गुणवत्तापूर्वक शिक्षा देने के साथ ही साथ उनमें राष्ट्र प्रेम की भावना प्रस्फुटित करना, समाज के अति निर्धन छात्र -छात्राओं को आवश्यकतानुसार आर्थिक मदद करना, स्वास्थ्यगत सेवा यथा संभव उपलब्ध कराना।

व्यक्तिगत एवं सामुदायिक स्वच्छता के प्रति जागरूक करना अपनी वसुधा की रक्षा हेतु पर्यावरणीय जागरूकता उत्पन्न करना।

मूलरूप से पुस्तकीय ज्ञान के साथ ही साथ नैतिक शिक्षा मूल्यपरक जीवन विद्या, योग, व्यायाम एवं संस्कार युक्त ज्ञान को बढ़ावा देते हुए एक आदर्श विद्यार्थी तैयार करना, ताकि भविष्य मे प्रतिभावान ही नही, अपितु नैतिक सद्आचरण युक्त व्यवहारिक संस्कार को अपने व्यक्तित्व में आत्मसात करके संस्कारवान नागरिक बनकर अपने गांव, समाज एवं राष्ट्र को एक नई दिशा प्रदान कर भावी पीढ़ी को प्रगति के पथ पर अग्रेसित कर सकें । इस प्रकार मैनें अपनी शाला लवनबन को हमारे विकासखण्ड के "आदर्श शाला" बनाने की परिकल्पना

की। इन सभी बातों को यथार्थ में परिवर्तित कर देना हमारे लिए एक वृहद चुनौती थी। चुनौती कोई एक नही असंख्य थी । हमारे युग पुरूष महान वैज्ञानिक मिसाइल मेन श्री ए. पी. जे. अब्दुल कलाम की प्रेरक विचार से मैं बहुत प्रभावित थी कि,

"सूरज की तरह चमकना चाहते हो, तो

सूरज की तरह जलना सीखो।"

स्वामी विवेकानंद जी भी कह गए है "कि खुद को कमजोर समझना सबसे बड़ा पाप है।

विश्व एक विशाल व्यायाम शाला है, जहॉ हम खुद को मजबूत बनाने के लिए आते है।"

बस.....! कुछ इसी तरह अनेक प्रेरणादायी विचारों को आत्मसात करते हुए मैनें उन्हे पूर्ण करने के दृढ़ संकल्प कर लिए । संसार मे संकल्प से ही मानव ने सिद्धियां प्राप्त की है।

3.4 योजनाः- विद्यालय के समस्त शिक्षक -शिक्षिकाओं का बैठक लेकर मैंने परस्पर चर्चा की। मैनें उन सभी से सहयोग की अपेक्षा करते हुए निवेदन किया कि, इस विद्यालय को एक आदर्श विद्यालय के प्रतिरूप गुणवत्तायुक्त, संगठित, संस्कारित बनाना है।

पहले तो कुछ लोगो ने विरोध किया किन्तु धीरे से वे सभी तैयार हो गए।

सभी ने मिलकर मेरा साथ दिया । मैंनें सारी चुनौतियों को स्वयं सामना करने हेतु दृढ़ संकल्प करके स्वीकार लिया।

मैंनें विश्वास पूरे विद्यालय स्टॉप पर किया, किन्तु भरोसा खुदपर किया ।

यही से संघर्षो का दौर शुरू हुआ। काल -चक्र अपने नियत पथ पर गतिमान था। पहले तो हमने सभी शिक्षक - शिक्षिकाओं से परस्पर चर्चा करके विद्यालय की मूल -भूत संसाधन के अतिरिक्त और कौन -कौन सी समस्याएं है उसे बिंदुवार तैयार किए जो समस्याएं समुदाय के माध्यम से पालकां के माध्यम से सुलझायी जा सकती थी, उसे उन्ही की माध्यम से क्रियान्वित करने की योजना तैयार की गई ।

इसकी प्राप्ति हेतु प्रतिमाह निर्धारित तिथि एवं दिन तय कर बैठक आयोजित करने की योजना तैयार की गई ।

छात्र - छात्राओं मे "स्वच्छता" एवं "नियमितता" अर्थात् साफ -सुथरा गण्वेश एवं नियमित शाला आए इस हेतु अनेक नवाचार एवं माताओं के वृहद कार्यक्रम आयोजित करने की योजना तैयार की गई।

छात्र उपस्थिति दर को बढ़ाने हेतु सतत् पालक संपर्क करने शिक्षक - शिक्षिकाओं को कक्षावार जिम्मेदारियां सौंपी गई।

कुछ अध्यापक -गण देर से शाला पहुंचते थे उन्हे भी सकारात्मक तरीके से स्नेह पूर्वक अपने नैतिक कर्तव्यों के प्रति सचेत रहने को निर्देशित किया गया।

अध्यापकों के विद्यालय हित मे किए गए कार्यो को मैने हमेशा उन्मुक्त कंठ से प्रशंसा की।

मैनें शाला की प्रत्येक उपलब्धि का श्रेय उन सभी को ही दिया।

प्रत्येक कार्यक्रम एवं क्रियाकलापों मे उनकी सक्रिय भागीदारी निभाने हेतु सदैव पुरस्कृत, सम्मानित एवं पूनर्बलित किया।

जो समस्याएं वृहद थी जैसे - अध्यापन कक्ष, कार्यालय कक्ष की कमी, चहारदीवारी (अहाता) की कमी, मैदान समतलीकरण आदि मूल आवश्यकताओं को सुलझाने हेतु मैंने अपने विकासखण्ड स्तरीय उच्च- अधिकारियों से सतत चर्चा करने की ठान ली।

मैनें एक शिक्षण सत्र् के समस्त स्थानीय पर्व राष्ट्रीय पर्व, दैनिक, साप्ताहिक एवं मासिक क्रियाकलाप, विद्यालयीन गतिविधियों का आयोजन स्वास्थ्य, स्वच्छता, क्रीड़ा, शिक्षण के मुख्य आयाम महापुरूषों की जयंती,

पुण्यतिथि, विशेष भारतीय तीज त्यौहार इन सभी को सुचारू रूप से संचालित करने हेतु एक वार्षिक योजना तैयार कर शालेय कैलेण्डर तैयार किया ।

दीर्घकालीन एवं लघुकालीन कार्यो की सम्पूर्णता की प्राप्ति हेतु एक वर्षीय एवं त्रिवर्षीय विद्यालय योजना तैयार की।

शासकीय प्राथमिक शाला लवनबन की एक वार्षिक पाठ्यक्रम तैयार किया गया, परन्तु मैंने पाठ्यक्रम को पूर्ण कराने के स्थान पर बच्चों की सीखने की समझ, क्षमता को केन्द्रित करते हुए उनके समझ के साथ सीखने पर बल दिया। उनमें भाषायीगत सुनने, बोलने, पढ़ने, लिखने, शुद्ध उच्चारण, शुद्ध वर्तनी लेखन, के कौशलों पर दक्षता हासिल करते हुए स्वतंत्र पाठक बनने हेतू यथासंभव प्रयास किया ।

ऐसे ही गणितीय अवधारणाओं को व्यवहारिक ज्ञान से जोड़ते हुए सीखने पर बल दिया । प्रत्येक वर्ष पलायन में चले जाने वाले विद्यार्थियों की समझने मे कई प्रकार की कठिनाईयां आ रही थी, ऐसे बच्चों की कमजोरियों का पहचान कर उन्हें उपचारात्मक शिक्षा देने हेतु भी योजना तैयार की गई। वहां के माता - पिता उस समय कक्षा 1 एवं कक्षा 2 के छात्र - छात्राओं को लेखन हेतु कापी, स्लेट, पेन, पैंसिल, साथ देकर भोजन ही नहीं थे।

यहां के पालक तो कक्षा 1 व कक्षा 2 के बच्चां को खेलने ही विद्यालय भेजते थे। पढ़ने - लिखने सीखने का यही दोनो कक्षा नींव का कार्य करते है, इससे यहां के अशिक्षित माता - पिता अनजान थे।

पालको की इस सोंच ने तो मुझे झकझोर कर ही रख दिया।

मैनें कक्षा 1 व कक्षा 2 के सभी बच्चों के लिए लेखन सामग्री की व्यवस्था की तथा कक्षा शिक्षिकाओं के माध्यम से उन्हें प्रदान कर उन्हे लिखने सिखाने हेतु कहा। बच्चों का गृहकार्य एवं कक्षा कार्य सभी कक्षा में कराए जाते है।

वृक्षारोपण कराने एवं उनकी सुरक्षा की जवाबदारी हेतु समुदाय से जुड़ने बाबत् अनेक कार्यक्रम आयोजित कराने की योजना तैयार की गई, ताकि समुदाय के लोग शाला से खुशी -खुशी जुड़ सके।

ग्रामीण स्तर पर जनसमुदाय के सुखद -दुखद कार्यक्रम शादी, छट्ठी, दशगात्र, मानस (रामायण) आयोजन, भागवत- गीतापुरण आयोजन गुरु घासीदास जयंती आदि के माध्यम से समुदाय से जुड़ने की हमने शुरूआत की।

एक दैनिक समय सारणी 10.00 से 4.30 तक तैयार की गई, जिसमें प्रतिदिन सरस्वती वंदना, सर्वधर्म प्रार्थना, सुविचार सुनाना, गुलाब -कमल चयन, ज्योंति - कलश चयन, खेल एवं कक्षा अध्यापन सम्मिलित है।

3.5 कार्यान्वयन :- संस्थागत समस्त क्रियाकलापों को दैनिक साप्ताहिक एवं मासिक वर्गीकरण करते हुए समस्त प्रकार के दायित्व के निर्वहन हेतु विद्यायालयीन शिक्षक - शिक्षिकाओं को प्रभार सौंपा गया।

जैसे - अनुशासन प्रभारी, टी. सी. प्रभारी, प्रवेश प्रभारी, सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रभारी, जनसंपर्क प्रभारी, बालसभा प्रभारी, पुस्तकालय प्रभारी, बाल सदन प्रभारी, वृक्षारोपण प्रभारी, आदि।

- **प्रवेशोत्सवः-** हमारे शाला मे प्रतिवर्ष नवीन शिक्षा सत्र् की शुरूआत "प्रवेशोत्सव" से की जाती है। हमारे प्रवेशोत्सव बहुत ही धूम धाम के साथ ही मनाया जाता है-, अतिथि के रूप में जनप्रतिनिधियों के अतिरिक्त हमारे अधिकारीगण मंचासीन होते है।

  नविन प्रवेशित नौ-निहालों का रोली, अक्षत से तिलक कर आरती उतर खीज पुड़ी चॉकलेट से मुंह मीठा कर नई पुस्तक, नए-नए गणवेश देकर विधिवत उनके विद्यारम्भ का श्री गणेश किया जाता है |
- **विभिन्न समितियों का गठन एवं बैठक आयोजनः-** इसके अन्तर्गत शाला प्रबंधन एवं विकास समिति का गठन, स्वच्छता दूत, बाल पुस्तकालय समिति, बाल - सदन, आदि का गठन करके विधिवत इन सभी

की बैठकें प्रतिमाह एक निश्चित तिथि पर निर्धारित समय पर अनिवार्य रूप से आयोजित करवाई गई एवं आज भी जारी है।

- **पाठ्य सहगामी क्रियाऐं** यहां -प्रत्येक शनिवार को पहले भी और वर्तमान समय मे भी योग व्यायाम - ,एवं बालसभा का आयोजन किया जाता है। बाल सभा विभिन्न विषयों पर आधारित होते है जैसें सांस्कृतिक गतिविधि, सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता, शब्द पहेली प्रतियोगिता, कला आदि । सृजनात्मकता के गुणों को विकसित करने हेतु चित्रकला, मृदाकला, कागज से विभिन्न कलाकृतियां बनाने हेतु प्रतियोगिता आयोजित कराये जाते हैं।
- विविध कार्यक्रम -: हमारी शाला में अपने देश की सामाजिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से अवगत कराने हेतु विविध आयोजन जैसे- स्वतंत्रता पर्व, गणतंत्र पर्व, रक्षाबंधन ,पौधारोपण, शिक्षक दिवस, वरिष्ठजन नागरिक दिवस, खेल दिवस, हरियाली पर्व, नागपंचमी, बसंत पंचमी, स्थानीय पर्व छेरछेरा, वार्षिक शालेय क्रीड़ा प्रतियोगिता, बालिका उत्सव ,माता स्नेह सम्मलेन, मातृ पितृ दिवस कक्षा 5 वी के विद्यार्थियों के बिदाईसमारोह एवं सबसे अंत मे परीक्षा परिणाम की घोषणा से वर्ष भर के कार्यक्रमों - का समापन किया जाता है।

- **दैनिक क्रियाकलापः** हमारी शाला प्रबंधन वास्तविक मे ज्ञान एक मंदिर स्वरूप ही है। जहॉ प्रतिदिन -कक्षाएं प्रारंभ होने के पूर्व भारत माता एवं सरस्वती मां की छायाचित्र पर दीप प्रज्वल्लित करके विद्यारम्भ का श्रीगणेश किया जाता है | समस्त छात्र छात्राए कतारबद्ध होकर दैनिक रूप से सरस्वती वंदना एवं सर्वधर्म प्रार्थना एवं राष्ट्रगान करते हैं

“तुम जिओं हजारो साल।
साल के दिन हो पचास हजार ।।“

यह पल बच्चो के लिए अविस्मरणीय रहता है। सभी विद्यार्थी बेहद खुश नजर आते है, क्योंकि ये सभी बच्चे गरीब तबके हैं, जिन्होंने आज तक कभी अपने जन्मदिन मनाने की कल्पना भी नही की थी, उन नन्हों के चेहरे की मुस्कुराहट से मुझे बेहद सुकून मिलता है। मेरे इस प्रयास से विद्यालय में छात्र उपस्थिति में निरन्तर बढ़ोतरी हुई है।

जन्म दिन मनाने के पश्चात अनमोल वचन, फिर सामान्य जानकारियां दिवस, त्यौहार इत्यादि जानकारी हम सभी शिक्षकां द्वारा दी जाती है। तत्पाश्चात कतारबद्ध सभी छात्र - छात्राएं अपने अध्ययन कक्ष की ओर प्रस्थान करते हैं |

बाल सदन (कैबिनेट) क्रियान्वयन :- इनके सदस्यों को निम्न प्रभार सौपें जाते है :- 1. शालानायक 2. उपशाला नायक 3. शाला सचिव 4. अनुशासन प्रभारी 5 स्वच्छता प्रभारी 6. जनसंपर्क प्रभारी 7. बागवानी प्रभारी, 8. पुस्तकालय प्रभारी, 9. लर्निंग कार्नर प्रभारी, 10. कक्षागत नायक - नायिका इत्यादि।

सभी चयनित प्रभारी छात्र - छात्राएं अपने - अपने कार्यक्षेत्रां को देखते हुए पूरी निष्ठा एवं लगन से कार्य करते है।

बाल सदन की भी मासिक बैठक रखी जाती है। हम सभी अध्यापक- गण मिलकर सुलझाते है । हमारे द्वारा प्रत्येक क्षेत्रों की निगरानी की जाती है एवं आवश्यकता पड़ने पर पर उचित मार्गदर्शन की जाती है।

- शारीरिक स्वस्थता एवं स्वच्छता जांच यहां विद्यार्थियों का प्रत्येक तीन माह के अंतराल में ऊँचाई -: एवं वजन मापन शिक्षकों के द्वारा की जाती है तथा प्रति सोमवार एवं मंगलवार शारीरिक स्वच्छता की जांच शिक्षको की उपस्थिति में स्वच्छता प्रभारी विद्यार्थियों के द्वारा की जाती है। विद्यालयीन कालखण्ड में छात्र छात्राओं को आकस्मिक दुर्घटना की आशंका रहती है। जिसे ध्यान में रखते हुए - हमारे द्वारा प्राथमिक चिकित्सा बाक्स की व्यवस्था की गई है, ताकि बच्चां को प्राथमिक उपचार त्वरित दी जा सके ।
- 3.6चुनौतियां:- विद्यालय को शून्य से सफलता के शिखर तक पहुंचाने की राह में हमारे पास असंख्य चुनौतियां थी । कुछ चुनौतियां ऐसी थी। जिनकी प्राप्ति हेतु हमें बुलंद हौसलों के साथ पुरे जोश, जुनून एवं जज्बे के साथ लंबे,लंबे डग भरते हुए रास्ते तय करने थे- जैसे आहता निर्माण, अध्यापन कक्ष निर्माण, पेयजल की पर्याप्तता हेतु सोलर ड्यूल की व्यवस्था, बच्चों के हस्त प्रक्षालन हेतु बहुनल टंकी निर्माण, बागवानी की सुरक्षा आदि। विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों के पालकों का विश्वास जीतना भी अंधेरे में लक्ष्य भेदन के समान था। मैंने बच्चों को स्नेह, ममता, समर्पण, शिक्षा, संस्कार एवं सम्मान देकर उनका विश्वास जीत लिया।
- **उत्कृष्ट सेवा का उदाहरणः** शिक्षण सत्र -2012-13 की बात है एक छात्र राहुल पैकरा पिता दीपक पैकरा था। उनके माता पिता उत्तर प्रदेश पलायन थे। छात्र अपने बुजुर्ग दादाजी के साथ रहता था । एक दिन सायकल से कहीं जाते समय राहुल का पैर सायकल से कट गया, उनके दादाजी आर्थिक कमियों के चलते राहुल का ईलाज नही करा सके। अब छात्र ने शाला आना बंद कर दिया। शाला नही आ पाने की स्थिति में मैं पालक संपर्क हेतु उनके घर पहुंची। मैंने देखा राहुल का पैर की चमड़ी संक्रमण के कारण गलने लग गई थी। मैने तुरंत उनके दादा जी से राहुल का ईलाज कराने हेतु अनुमति ली । मेरी मदद किए जाने की बात सुनकर वह फफक फफकर रोने लगा। मैंने उस छात्र - का पूरा ईलाज करवाया तथा नियमित शाला मे बुलाकर घाव का ड्रेसिंग भी स्वयं किया।

  एक माह के पश्चात् उसका पैर ठीक हो गया । वह शाला आने लगा। इस सेवा एवं समर्पण से समस्त पालकों ने अपने बच्चों को मुझे पुरी तरह समर्पित कर दिया।

  इस प्रकार मैंने पुरे ग्राम वासियों -के हृदय में अपना स्थान बना लिया।
- **कोविड 19-संक्रमण के दौरान प्राप्त चुनौतियां एवं निपटारा -:** चीन के वुहान शहर से उत्पन्न कोरोना महामारी ने पूरे विश्व को संक्रमित करके अपने चपेट में ले लिया। इस भयंकर महामारी ने हमारे पूरे भारत में भी मौंत का तांडव मचाया। इस महामारी के बढ़ते संक्रमण के दृष्टिगत रखते हुए हमारे छ.ग. शासन ने भी सम्पूर्ण शिक्षण संस्थाओ को अचानक बंद करने का निर्णय ले लिया | दिनांक 12

मार्च को हम सभी को अकस्मात मिडिया के माध्यम से यह सूचना मिली और हमें भी 2020 अकस्मात विद्यालय बंद करना पड़ा।

लगभग 2 महिनें शख्त लॉकडाउन में बीतने के पश्चात ऐसी विषम परिस्थितियों में बच्चों की पढ़ाई की चिंता सता रही थी। हमारे छ.ग. शासन की नई पहल "शिक्षा को सभी के लिए" हमारे राज्य शासन द्वारा ऑनलाईन वर्चुवल प्लेटफार्म cgschool.in के पोर्टल पर "पढई तुंहर दुवार" कार्यक्रम चलाया गया इस कार्यक्रम की सूचना जैसे ही हमें हमारे शिक्षा विभाग द्वारा मिली, हमनें भी इसके माध्यम से क्लास लेने की सोंची, किन्तु ऐसे ऑनलाईन वर्चुवल प्लेटफार्म से हम अनभिज्ञ थे। हमनें इस तकनीक को सिखा और बच्चों को cgschool.in पोर्टल में पंजीयन किया। ग्रामीण बच्चें ऑनलाईन क्लास में नही जुड पा रहे थे, इसके लिए एस सप्ताह तक निरंतर लवनबन में घर-घर जाकर पालकों को प्रेरित किया तथा उनकी विभिन्न समस्याओं को परखते हुए पूछा गया। ऑनलाईन कक्षाओं में बच्चों के नहीं जुड पाने के कारण को समझा एवं चिन्हांकित किया हमारे ग्रामीण स्तर पर समस्याएं अनंत थी किसी ने आर्थिक तंगी, किसी ने नेटवर्क समस्या तो किसी ने स्मार्टफोन की अनुपलब्धता बताई।

चूंकि हमारे द्वारा वि.खं. स्तरीय ऑनलाईन वर्चुवल क्लास जारी था, ऐसे में हमनें उसे तो जारी रखा ही, साथ ही "छात्रहित सर्वोपरि" को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए ग्राम के सरपंच जी से अनुमति लेकर गांव के ही पंचायत भवन एवं सामुदायिक भवन में ऑफलाईन क्लास भी लेना शुरू किया।इस हेतु पालकों से स्वेच्छा से पारा मोहल्ला क्लास में भेजने कहा गया।

हमनें भारत सरकार आयुष मंत्रालय एवं स्वास्थ परिवार कल्याण के कोविड-19 संक्रमण से बचाव के समस्त उपाय को व्यवहार में लाते हुए समाजिक दूरी का पालन, मास्क लगाना, साबुन सेनीटाइजर की उपयोगिता करते हुए पारा मोहल्ला ऑफलाईन क्लास संचालन शुरू किया। इस दौरान समस्त छात्र-छात्राओं को मास्क, वर्कशीट, कापियां, पेन, पेन्सिल इत्यादि शैक्षणिक सामग्री भेंट किए गए। प्राथमिक स्तर के बच्चों को समान्य ज्ञान एवं आवश्यक पाठ्य वस्तुओं को सिखाने हेतु बच्चों तक ऑडियो भी हमने शेयर किए। बच्चों की शिक्षण कौशल में गुणवत्ता बढ़ाने हेतु सहायक शिक्षण सामग्री निर्माण कर एवं मूल्यपरक नैतिक कहानियों की गीतमयी रचना तैयार कर यूट्यूब के माध्यम से उनतक शेयर किया गया। राज्य शासन की महत्वपूर्ण योजना "पढई तुहंर दुवार" के अंतर्गत "बुल्टु के बोल" एप में भी हमारे द्वारा तैयार ऑडियो डाइट रायपुर द्वारा शेयर किया गया है।

आज लवनबन के बच्चों के अतिरिक्त हमारे पूरे छ.ग. के बच्चों द्वारा हमारे द्वारा तैयार प्रविधियों को अपनाया जा रहा है, इससे मुझे बेहद ही खुशी व आत्मिक संतुष्टि मिलती है कि..... मैंने अपने बच्चों के लिए कुछ तो किया।

Youtube channel – Tikeshwari Patel, Youtube link - https://youtu.be/XBAtgdwc5oA

में जाकर इनके द्वारा जारी समस्त सहायक शिक्षण सामाग्री (TLM) देख सकते है। जो cgschool.in में शिक्षा सचिव श्री आलोक शुक्ला जी के वेबसाईट में देख सकते है।

पाठ्य पुस्तकें, गणवेश एवं सुखा राशन भी उन्हें उपलब्ध कराया।

हमारे विद्वान मनीषियों द्वारा कहा गया हैः-

"जहॉ चाह .....वहॉ राह"

बस हमने अपनी चाहत को बनाए रखा,

दृढ़ संकल्प कर लिया था कि अपने संकल्पों से
"बिन्दु को सिंधु" मे तब्दील कर देंगें।।

"चाह मेरी" कविता
नही चाह, सूरज-सा चमकूं।
नही चाह, चन्दा-सा दमकूं।
नही चाह, तितली-सी इठलूं
नही चाह, भ्रमर-सा गूंजूं।
नही चाह, कोयल-सी कुहूकूं।
चाह यही बस.....मां भारती
राष्ट्रहित सेवा पथ पर,
सुमनों - सा मैं बिछ जाऊं।
कर्मरथ आरूढ़ हो,
निज चरणां में सज जाऊं।

3.7 परिणाम :- ग्राम लवनबन में कार्य करते हुए जन समुदाय सभी शिक्षक -शिक्षिकाओं का साथ मिला और हम सबसे समन्वय से मेहनत रंग लाई । आज हमारा विद्यालय सचमुच एक "बगिया" मे खिले हुए रंग - बिरंगे फूलों की भांति लगता है। यह एक ऐसी बगिया है, जहां सभी माली अपने नन्हे- मून्ने फूलों (बच्चों) को अपने स्नेह व स्पर्श से ज्ञान की बातें सिखाकर उनके भविष्य को सुदृढ़ सुगठित एवं संस्कार युक्त बना रहे हैं ।

संस्था प्रमुख होने के नाते मैंने भी इन सभी में (हमारे बच्चों व शिक्षक -शिक्षिकाओं) का परस्पर समन्वय बनाने की कोशिश की। आपसी मनमुटाव, वैमनस्व जैसी बातों को भूलकर हम सभी "आदर्श शाला परिवार" के रूप मे संगठित हो चुके है । अब हम प्रधानपाठक के रूप में एक शिक्षिका की भूमिका निभाने के साथ-ही-साथ एक ममतामयी, स्नेहमयी एवं करूणामयी "मां" के रूप में बच्चों को समर्पित कर चुकें है, ताकि वे निःसंकोच अपनी भावनाओं, समस्याओं को हम तक संप्रेषित कर सके।

विद्यालय हित में हमारे द्वारा निःस्वार्थ भाव से किए गए सकारात्मक कार्यों की समीक्षा करते हुए विद्यालयीन प्रबंधन में हुए सुधार को देखते हुए राज्य शासन छ.ग. द्वारा शिक्षण सत्र् 2016-17 में राज्य का उत्कृष्ट सम्मान "राज्यपाल पुरस्कार" से हमें सम्मानित किया गया।

राज्यपाल पुरस्कार से पुरष्कृत होकर पुनः विद्यालय वापस होने पर पूरे ग्रामवासियों द्वारा आतिशबाजी एवं बैंडबाजे के साथ रामधुन गाते हुए हमारा स्वागत किया गया, यह पल हमारे लिए अत्यंत ही भावुक क्षण था, हम सम्पूर्ण ग्रामवासियों के स्नेह से द्रविभूत हो चुके थे। वह पल आज पर्यन्त अविस्मरणीय है।

विभिन्न पुरस्कार

1. छ.ग. शासन द्वारा राज्यपाल पुरस्कार 2016-17।
2. छ.ग. शासन शिक्षा मंत्री द्वारा शिक्षण सत्र् 2016-17 सम्मानित किया गया ।
3. जिला प्रशासन बलौदाबाजार द्वारा शिक्षण सत्र् 2017-18 सम्मानित किया गया।
4. स्थानीय निजी समाजिक संस्थाओं द्वारा शिक्षण सत्र् 2017-18 सम्मानित हुई।
5. सद्भावना नारी शाक्ति सम्मान रायपुर द्वारा शिक्षण सत्र् 2019-20 सम्मानित हुई ।
6. राष्ट्रीय शिक्षा रत्न मथुरा (उत्तर प्रदेश) द्वारा शिक्षण सत्र् 2019-20 सम्मानित हुई।

❖ **वर्तमान परिदृष्य -:**

पहले बच्चे मैले कुचैले कपड़े पहनकर शाला आते थें। निरन्तर हम सभी का प्रयास जारी रहा । बच्चों को नियमित साफ एवं स्वच्छ तथा गणवेश धारण करके विद्यालय आने हेतु प्रोत्साहित करने का परिणाम यह हुआ कि, आज हमारा विद्यालय प्रागंण एक "बगिया" से कोई कम नही है । नव निहाल बच्चों के रूप मे छोटे-छोटे- रंग बिरंगे फूल स्वरुप ये मेरे बच्चे तथा माली स्वरुप मेरे शिक्षक साथी | इन सभी से मई अत्यंत स्नेह करती हूँ|

मेरी अभिलाषा है की ..... यह हमेशा बच्चों को मुस्कान से सदा हस्त-खिलखिलाता रहे

कविता - मेरी बगिया

अब मेरी बगिया में,
चम्पा, चमेली और गुलाब खिलते हैं,
अब इस निर्मल नील सरोवर में,
नील कमल और कुमुदिनी खिलते हैं,
कल तक जो मैले -कुचैले से थे,
अधखिल से थे,
आज स्नेह रूपी ओस की बूंदो से,
ज्ञान रूपी सूर्य की किरणों से
पुष्पित है, पुलकित है,
चन्द्रमा सा उज्जवल और नीर - सा निर्झर है।
जन्मदिन हो जिस बालिका का,
होती है, उस दिन शाला की ज्योंति,
जन्मदिन हो जिस बालक का,
होता है, उस दिन शाला का कलश,
ज्योंति और कलश हैं,
लवनबन की आन-बान और शान ।
जिस दिन जो ज्योति बनें, उस दिन उसकी क्या पूछे ,
जिस दिन जो कलश बने, मन खुशी से झूम उठे,
"फूलो"की इस मासूमियत को मिलती है हर माली से दुआ है।
रखें ईश्वर मेरे इन फूलो को
यूं ही महकता।
न मुरझाय कोई भी,
असमय ही अधखिला।
हैं इस बगिया मे माली "सात"
इन फुलां से भी कोई कम न समझा उन्हें मैंने,
बिखरे हुए इन फूलां (शिक्षक स्टॉफ)को सहेजकर,
एक धागे में पिरोया।
टूट जाते है, बिखर जाते हैं,
सपने सारे अक्सर,
सोचती हूं यह धागा,
सहसा कभी न टूट जाये,
टूट कर मेरे सारे सपने,

यूं ही न बिखर जाये।
है उनकें कंधों पर इस बगिया की नींव
सींचा है मैंने उन्हें स्नेह और विश्वास से,
है पूरा विश्वास कि,
कभी न टूटेगी मेरी यह आश,
कभी न टूटेगी मेरी यह विश्वास।
टिकेष्वरी पटेल की कलम से

3.8 निष्कर्ष :- जीवन के प्रत्येक पहलू में पक्ष-विपक्ष, जय-पराजय, हर्ष-विषाद, लाभ-हानि आदि होते ही हैं। अतः हमें भी इस विद्यालय में कार्य करते हुए कुछ इस तरह के अनुभव हुए।

लाभ :- हमें बहुत गर्व है कि आज हमारे विद्यालय को आदर्श विद्यालय के रूप मे जनपद, जिला व प्रदेश मे एक नई पहचान मिली यह उन ग्रामवसियों के लिए भी गर्व की बात है। विद्यालय को वर्तमान स्थिति तक ले जाने में समस्त विद्यालय परिवार एवं जन समुदाय एवं हमारे उच्च अधिकारियों का महत्वपूर्ण योगदान है।

हानि :- बच्चों के लेखन अभ्यास हेतु शैक्षणिक संस्थाधन हमारे द्वारा जुटाने का दुष्परिणाम यह हुआ कि, कुछ संभ्रात एवं सम्पन्न पालकगण भी शैक्षणिक सामग्री बच्चों को यह कहकर नहीं देते है, कि विद्यालय में देंगें। इस प्रकार कुछ पालक अपनी जिम्मेदारियों से बचना चाहते है जो कि, उचित नही है यदि वे स्वयं आर्थिक रूप से सक्षम है तब।

4 संदर्भ :- वेब लिंक महाराष्ट्र माड्यूल से

Swami Atmanand Govt. Shivlal Rathi S.O.E (Eng.) Bemetara (C.G.)
Principal - Mrs. Sudesha Chatterjee
Email- sudeshamishra@gmail.com, Mobile- +919893112245

"There have been times where it's tough because it's something I really wanted, because what I've found is that the more I stick to my convictions, the more God sticks to his promises."

With the beginning of the day each one of us has to reach our place of work whether it is our old job or a new position and we have to be excited about the adventure that is about to begin. To move forward in any new direction means we will be growing personally and professionally. When I was given the opportunity to serve as Principal in "Swami Atmanand Government Shivlal Rathi School of Excellence (English) Bemetara". I was happy as I felt that I am doing comeback again towards English medium but on the other hand it was a big responsibility because being a principal I have to oversee all higher-level operations to create a safe learning environment and set performance goals both for students and teachers. There were so many ideas into my mind and I came to Bemetara with a lot of energy but here everything was beyond my expectation I was in dilemma to how to start because initially the school building needed construction which was in a lonely place sometimes it became so scary in the evening. But everything needs time & I too gave time to myself as well as to school to its fine fettle.

Figure 3 Old Building of School

Figure 4 Proposed New School Building

Now the next task was to evolve a team I believed that teachers are the strongest pillars of society as they carry the great responsibility of grooming and educating new generation I felt that one should honor the invaluable contributions of teachers as they are the most important stakeholders in our education system. Whenever I sat alone I found myself surrounded with the thoughts that how I could make things better. It was a big project in tended to prevail equality which was appreciable as this project was providing the opportunity to the weaker sections of the society to complete with the common pace.

Sometimes I felt that the job of being a principal was becoming increasingly stressful and harder to successfully maintain a healthy work-life balance in. This was at the very time when my school was in growing stage. How ironic it is that – during this time of Covid-19 induced uncertainty, at the very time my team associated with increased happiness and better health, being thankful is a practiced discipline. Instilling the gratitude in children is not an easy task and doesn't just happen by accident. While teaching kids to be polite and say "please" and "thank you" are important social norms.

The ability to see the light at the end of the tunnel or indeed, any light in the darkness, is always a challenge for a school leader and never more obvious than in the uncertain and rapidly changing times. The act of being principal is often similar to that of a juggler as we try to meet the needs of the ministry, our community, current pedagogical trends, our learners and our staff. We never quite master the job. There is always going to be a new cohort of learners.

Figure 5 TLMs of Math Lab

Now was the time to show the outcomes of the hard work done by our team to prepare more than 200 working models of mathematics and with the grace of God we successfully did the inauguration of "Ramanujan Lab" with the hands of our honorable collector sir "Shri Shiv Anant Tayal" on 22 December 2020 right on the day of great mathematician's birthday. It was like an achievement for us because my team started working from October and we took the target of completing our project till 20 December, I was blessed as I got the team of engineers. And they have the habit to embrace change and work with rapid advances in technologies and thinking. I decided to use their brain and skills in constructive way and to channelize their energy in preparing TLM's and working models of mathematics.

The project was headed by Head Mistress (Middle) she builds up a team of engineers in which three lab attendants were involved. "Genius is one percent inspiration and 99 percent perspiration", with the same spirit we accomplish successfully did the inauguration. As the school started heightening so as the requirement. I bought musical instruments and started calling students in small group by following all safety measures against corona virus. Students were taught to play musical instruments and sing national anthem, national song, state song and prayer in order to make them ready for the new

Figure 6 Misical Instruments in Music Room

session. I also made a gratitude wall as practicing gratitude is associated with increased happiness and better health, being thankful is a practiced discipline. Instilling the gratitude in children is not an easy task and doesn't just happen by accident. While teaching kids to be polite and say "please" and "thank you" are important social norms.I asked everyone in my team to instill the practice of gratitude among children and write on gratitude wall. I believe that visual representation of a gratitude is important as well as the regular rhythm of practicing gratitude together. I gave freedom to everyone including grade-4 to write their messages on gratitude wall.

Figure 5 Library

Libraries have always been seen as quiet sanctuaries for reading and as book depositories, but definitely not hubs for innovation. In a learner-centered paradigm, libraries serve important purposes, for one of their main commitments is to cultivate self-interest. In our school's library we kept all material which was useful for the academic goals and interest like many books of good authors. The walls were embellished by the pictures of renowned writers of literature and noble laureates. It was like an arbiter of the sources to which students are given access; I was intended to utilize every corner and wall of my school to give some learning. The dining room exists to serve the students and give message every day that "we value you". I want to spread a message to value food and the hard work done by the farmers to feed us. I will ask my students to take care of the cleanliness of their school and throw the left-over food in the dustbins provided, one for wet garbage and another for dry because that will be the basis of my analysis as I will keep a watch on the quantity of the leftover food. I feel that the message is embedded in the surroundings of the dining room, in the food itself. It speaks to nourishment of the whole person, in an environment of hospitality, health and respect. One thing always strike into my mind that how we can encourage students to participate more in class? However I find an effective way that can help students stay more engaged: "Creative classroom seating". When we arrange the seats in a classroom according to each lesson and use flexible sitting arrangements, our students will retain more information and ignore common classroom distractions.

Figure 6 Classroom Seating

Teachers also like creative classroom seating arrangements because they keep students engaged. Some chairs have small writing desks attached to them, while others have trapezoid-shaped tables located around the classroom which look more creative

particularly in primary section. Even I feel that dynamic sitting arrangement will prove helpful in inclusive education as it will enable each student to fully participate in the learning environment provide a positive climate, promote a sense of belonging and ensure student's progress toward appropriate personal, social, emotional and academic goals. After mathematics lab now is the turn of English lab as language laboratory is very useful for accessing student's speech because good communication skills are indispensable for the success of anyone. English lab is a technological aid for learning; it has a number of advanced facilities that can help a student to learn a language with proficiency to communicate. It has become inevitable in today's context. English is important for socializing and entertainment as well as work! English is the dominant language and has become almost a necessity for people if they are to enter a global work force. If you speak English, you won't need to rely on translations, this is the reason I asked my team to put all their efforts in making English speaking environment in school including grade -4as whenever one comes to school, grade-4people are the one who interact with the outsiders or visitors. They have hundred and one duties to do and they will be able to do their work with more efficiency. With our efforts they will also perform their duties with common pace. I tried to make each corner of the school to give some useful message and learning. So, I tried to show case the specialties of our state by placing big posters with vivid colors showing the specialties like delicious food items, wild life, tourism, historical Telling about the state at a glance. Monument sand places, metals and mining. The whole corridor is adorned

School administration is a broad field that encompasses almost any topic related to the operating of an academic institution. Being principal, I usually play a key part in the development of school. Sometimes I feel that I face the challenge of keeping my institution modern by facilitating the adoption of new technology or techniques that could provide value to the organization. A successful school is about much more than teaching. Effective administration and operations support an education that goes well beyond imparting knowledge.

Swami Atmanand Government Excellence English Medium School Balaji Nagar, Khursipar Bhilai (C.G.)

Principal -Mr. Saurabh Sharma

Conceptual Issues and Processes in School Leadership

Swami Atmanand Government Excellence English Medium School Balaji Nagar, Khursipar is a school in Bhilai (C.G.) which has a Semi-Urban location. The locality is of Middle Class families along with Lower Middle Class and they got an opportunity of sending their children to a school with full facility and that too with no cost in all means.

From the very beginning i.e. from June 2020, we started giving admission forms to the students with the help of Hindi Medium School staff members. Good response was received from the local community and that can be seen in the eagerness of parents to collect admission forms from the Office.

As received instructions from the Principal Secretary, 40 students were to be taken for each class from Class I to Class IX. But I had to seek special permission for taking more students and instead of one section; we took admission for three sections of every class. That too for two shifts – Morning and Evening.

We had recommendation for student's admission from local politicians, Education officials and also from the local MLA. At present we are having strength of 919 from Class I-IX. Recently, we got 6 Teachers from Deputation and 8 Samvida (Contractual) Teachers.

All the admission work was carried out throughout the pandemic period and that too with limited staff members.

Online classes are being run smoothly in our institutions. At present, we are dealing with parents and asking them for student's regular participation in online classes and also solving their problems regarding downloading of Cisco Webex App.

Developing Self and Building Teams

It is never too late to learn new skills and develop ourselves. Personal development can help us to set goals and reach our full potential.

Developing self and others in a behavior that focuses on demonstrating commitment to ongoing professional development. Developing self and others is not just about our own individual development, it is also about demonstrating how we are supporting those around us to achieve their full potential.

Some practical ways which we have adopted to improve ourselves are as follows:

I. Asking Teachers to frequently use Library and Read a Book daily.
II. Picking up a new Hobby.
III. Willingness to learn.
IV. Help to overcome their fears. V. Create an inspirational room.
VI. Helping them to have a weekly routine.
VII. Proper Plan.
VIII. Starting a Life Hand book
IX. Getting out of Comfort Zone X. Getting regular feedback

Transforming Teaching-Learning Process

Helping Teachers to use technology–based teaching and leaving behind the old ways adopted earlier. The children too are to be educated to be disciplined in their online classes.

Every student need to know right processes and techniques in order to learn effectively and score good in the exams. Tips are given to students for scoring good marks in the exams. These are some basic strategies followed:

a) Active listening in the classroom
b) Ask for help from the teachers
c) Do not depend on others
d) Doing the homework on time
e) Effective reading and learning

Leading School Community Partnership

It is like a dream come true for the parents to send their children to an English Medium School with well qualified teachers and other infrastructure. But we are keeping a constant touch with the parents and helping them to understand new technology with proper attention of their kids in the studies. Our teachers are always in touch with the kids to help them improve their learning in all ways. They continue taking classes in the late evening, correcting their assignment work, and help them to cope with the present situation.

Improving School Administration

Ours is a new institution coming up with new infrastructure and the work is in progress. Indeed infrastructure is the most important core aspect for proper administration and

functioning of any institution. The real success story begins here. But still it is a challenge for me and my teaching staff to work in these circumstances.

Anyhow we have planned academic work for which we have to evaluate the students each and every time. Our evaluation process includes their attendance and performance in the online class, their assignment task and also by checking their subject knowledge.

We will be conducting Unit Tests each and every month and the last 5 days of the month, we have a schedule for their tests.

We would like to change the traditional pattern of evaluation and our Team members / Teachers are working on it. We want the child to learn in a playful environment especially for the primary kids. Helping them to learn small slogans, prayers and wishing their parents etc.

We have planned to keep a monthly record of each and every student of our institution and the work has begun in that area. The teacher will be in touch with each and every student. We are calling 5-7 parents daily for clearing their doubts and daily interaction with the teachers and the kid.

Planning for the student's assignment work and Test pattern to be conducted from 25th to 31st January 2021 is still going on. Three of our Primary Teachers will be attending a Workshop at Old DIET Building Kasaridih, Durg from 18th to 21st of January.

We had an Induction Program for the entire teaching staff of our district at DPS Risali last month for 3 days. Anyhow we will begin our evaluation process from 22nd of this month. We have the student's progress and their attendance with us of the last month. We will try to reach those students who are not attending online classes.

Student's copies are also corrected by the teachers. Some students do come to meet us and we have kept timing for them from 2.30pm to 3.30pm so that they can attend the online classes in the First session and the Post Lunch session is dedicated to discussion with some parents keeping all the precautions and other government norms due to COVID-19.

Teaching and helping students is our first priority and improving evaluation is given due importance. Myself with active staff members are planning to prepare the kids to face the life challenges along with studies.

Swami Atmanand Government Excellence English Medium School Rajnandgaon (C.G.)

Principal – Ms. Asha Menan

Email- ashamenon44@gmail.com, Mobile- 7697036604

In the month of May when the whole country was on lockdown, I was transferred to Rajnandgaon. I held a new hope, a new goal with me. As a Principal I had bag full of experiences but in the venture where I was in, is an inspirational project of our Honorable Chief Minister and our Honorable Principal Secretary Dr. Alok Shuklaji.

"The highest interest of education is tolerance"

Sarweshwar Das N.P.N School of Excellence is situated in the mid-town of Rajnandgaon where public interference was exceeding day to day.

The school building has an appearance of a huge palatial edifice. The airy classrooms, well arranged corridors with the large playground which is always occupied for various activities/sports etc. of the town. The building renovation work was taken up by the Municipality who could timely finish their work handing over to us with well-planned laboratories. The school building was white-washed, proper floor work, appropriate furniture for students etc. were provided.

As instructed, I stepped in the first step, where I distributed thousands of admission forms.

Figure 1 School or Excellence

The downtrodden people around the school came running to me with an expectation of, their ward being given admission in the school. Some had revealed their grievance as they had lost their jobs and were not in a position to send their children to the school where they studied. Many a times I felt as if, I am a Saviour who had come to rescue them. The seats were limited and the admission forms were numerous. After scrutiny the students were selected for lottery then we could

Figure 2 The Laboratories

select 40 students in each class. Later on, with the permission of Honorable Collector Sir and the society members ten-percent of the seats were increased. The online classes were organized from the month of August. Experts from other districts were taking the online classes of our school for class 6 to 10.

In the month of October, teachers were recruited from then the online classes of both Hindi and English medium schools were conducted in a systematic manner. All the teachers were actively and dedicatedly taking part in encouraging the students to take part in public speaking, dance, music etc. Students took part in many national competitions like NMMS, NTSE, and Vigyan Paheli etc. Students of the school are coming up with flying colors in many cultural events conducted by the district. Even being online, the student-teacher rapport is quite appreciative. The students are curious to reach the school and meet their friends and teachers. They are taught prayer songs, national songs virtually and many a times on different occasions, competitions are held for singing, dancing etc. Thus, we could give a platform to display their talent.

Figure 3 Creative Hands

The Hindi medium school was registered for NCC earlier, where every year 55 new students could be registered. This year we could select the newly admitted students in the NCC and hereafter, there is a possibility of increasing the number of seats of NCC in the school.

Figure 4 NCC Candidate

In the period of pandemic, it was very hard for our team to communicate with the parents to distribute the provisions but we managed somehow, to provide it to them on time.

We have a library where we are resourced with books of varied registers. We are planning to develop a reading corner in all the wings of the school where the students of all levels could get the opportunity to develop their reading skill.

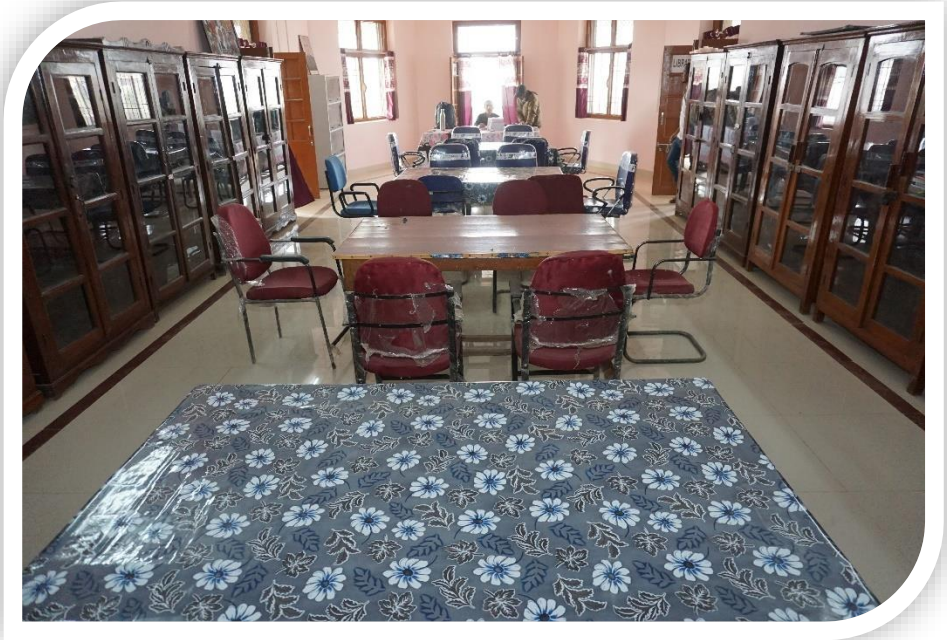

Figure 5 The Library

The school administration has to cater the entire activities which include academic, administrative and financial aspects. I have been trying my level best to bring my school to that standard where the authorities of the district and the state have aspired. We are trying to academically progress the children in standing neck to neck with other schools of the country.

Swami Atmananda Govt. English School, Tarbahar Bilaspur, C.G.
Principal - Mrs. Usha Chandra
Email- ushachandra10@gmail.com, Mobile-9827410965

TRANSFORMING TEACHING LEARNING PROCESS

1. School Head Information

'Everyone can rise above their circumstances and achieve success if they are dedicated to and passionate about what they do.'

- Mother Teresa

A person always doing his or her best becomes a natural leader. Smt. Usha Chandra is the Principal in the School Education Department since July 2015. Then she got the privilege to become the Principal of the dream project of C.G. Government under the scheme of Swami Atmanand Govt. English School (SAGES) and after facing an interview is the Principal of SAGES, Tarbahar, Bilaspur. She is a proud product of St. Joseph's Convent School, Bhopal and did her masters in English literature and B.Ed. from Guru Ghasidas University, Bilaspur. She began her career in School Education Department since 1992 as lecturer of English and was a dedicated teacher who gave her hundred percent to the students known to be kind yet firm, an effective school leader, innovative, compassionate, respected and a visionary, an efficient communicator, has a positive and lasting relationship with all her students, teachers and stakeholders.

Always eager to work together with her teachers to improve her school, her classrooms and her student's learning. Always holds teachers accountable for student's achievement. She makes available herself at all times, walks through the classrooms daily and outside during every recess, organizing activities, interacting with the students, getting to know them. She encourages teachers to interact and often assigns them to observe one another. Her focus is always on the students and how she can work together with her staff to make a difference in the lives of the students as dedicated professionals. For her hard work, dedication and sincerity she was honored by the Mahila and Bal Vikas Vibhag (ICDS) as one of the best Principals. She has led her previous schools to academic success. As the Schools of Excellence of C.G. State are to be developed to be the pride of the state, she wishes to be an integral part of this dream project and contribute towards making it a big success.
As Nick Giovanni has said, 'It is not who you attend school with but who controls the school you attend.'

2. School Information

'I'm not going to school just for the academics – I wanted to share ideas, to be around people who are passionate about learning'

These lines are so profound when there is a mention of SAGES, Tarbahar, and Bilaspur. English learning has become indispensable for the children to keep pace with modern world. Government's decision to set up English medium schools resulted from persistent public demand owing mainly due to parents' inability to meet the high fee structure of private schools and also the government's belief that no child should be deprived of opportunity for education of his or her choice mainly for parent's poor inability to pay the cost. And so the dream project of C.G. Government was realized with the opening of 52 English Medium Schools in all 28 Districts across and now 118 more schools are to be opened. These English Medium schools were to be operated under Swami Atmanand Government English Medium School scheme launched by C.G. Government to mark the occasion of state hood Day. Swami Atmanand was an educationist and social activist from Raipur. Born in the year of 1929 Atmanand Ji was a Gandhian and a follower of Ramkrishna Parmahansa. A very dynamic monk, he inspired the country to follow a life of service as per the teachings of Swami Vivekanand. SAGES, Tarbahar is in the heart of the city Bilaspur.

The school was inaugurated on 3rd January 2021 by honorable and valued Chief Minister of C.G. Shri Bhupesh Baghel Ji. Some of the remarkable features of this school are –

- Education in this school is free from classes 1 to 12. Out of 560 seats, there are 477 students in the school. During the difficult period of Covid-19 online classes and tests were being conducted sincerely with a lot of curricular activities in which the children participate actively.
- One of the main reasons behind the enhanced credibility of this school is the quality of teaching staff who are appointed on deputation by the Education Department. There are 29 teachers in the school.
- The school has library, science labs and computer labs well equipped with modern facilities, smart classrooms equipped with interactive boards, green boards and white boards, the best of sports facilities – a special mention is the availability of table tennis table. Scouts and guide and Red Cross are also active in the school.
- The various schemes of the Government are implemented in this excellent school to name a few – Midday meal from classes 1 to 8 (a special mention is that "Sukha Rashan" was delivered at the doorstep of the students during the tough period of Corona), state scholarship from classes 3 to 12 stream wise, minority scholarship, scholarship for the children with special needs, distribution of books from classes 1 to 10, uniform distribution from classes 1 to 8. Saraswati Cycle Yojna for the girls of class 9. Participation of students in Inspire Award regularly.

3. Best Practice

Title: Transforming teaching learning process.

Introduction:

Back in 2005, the NCF made it clear that student's participation in their learning is key to achieving best learning outcomes. Students should have the opportunity to –

- Contribute ideas when learning.
- Talk about and discuss their thoughts and experiences.
- Relate what they learn in schools to their everyday lives.

In good schools, teachers themselves try to be active learners and reflect on their practice by regularly –

- Examining what they do.
- Checking what is actually being learned by each student.
- Adapting and improving their classroom practices including their teaching skills.
- Collaborating as collaboration opens up paths to new thinking and discovery.

Learner centered teaching moves the focus away from the teacher and onto the learners. Learners are actively involved in the classes. They build their knowledge with the support of the teacher and the other learners. Pair and group work can give all students a chance to participate and practice. The teacher's role changes during group work. While the students work in groups, the teacher quietly walks around and monitors. We can say that teaching-learning process is a combined process where an educator assesses learning needs, establishes specific learning objectives, develops teaching and learning strategies, implements plan of work and evaluates the outcomes of the instruction (IGI Global Publisher of Timely Knowledge).

Objectives:

Learning is more important than teaching. Teaching has no value if it does not result in learning on the part of students. It helps the teacher to determine evaluate and refine their

instructional techniques and in setting-up, refining and clarifying the objectives (essencejournal.com, Volume 9).

The ultimate goal of teaching is to promote learning. Although everyone is capable of learning, a student's desire to learn is vital to master new concepts, principles and skills. Students take many of their learning habits from their teacher. If the teacher doesn't show interest in the subject matter he is dealing with, students themselves are less likely to make effort to learn. The teacher should have appropriate class control and discipline. They should develop a capacity to do, observe, infer and to generalize. Learning on the part
Of students helps the teacher to determine, evaluate and refine their instructional techniques.

Planning:

'Our goals can only be reached through a vehicle of a plan, in which we must fervently believe and upon which we must vigorously act. There is no other route to success.'

- Pablo Picasso

In SAGES, Tarbahar, Bilaspur, the teachers themselves try to be active learners and reflect on their practice by regularly –

- Observing and examining what they do.
- Checking what is actually being learned by each student.
- Adapting new techniques and improving their classroom practices.

As the head of the institution and school leader, the Principal encourages and gives full support and creates learning environment for teachers to experiment in their classrooms and reflect on their practice. The teachers are inspired to try out new ways of working and develop new skills. Because of the difficult time of the Covid-19, all the schools were closed and the teachers had to take online classes. It was a difficult phase for many but the Principal supported and made the teachers feel safe to depart from old habits of teaching
The classes face to face. The following ideas were adopted to promote teaching and learning –

- Watch videos of classroom practices in other schools as a way to discuss teaching approaches.
- Encourage teaching experiments where teachers try something out and discuss it together afterwards.
- Promote sharing of ideas.

- Make some protected time for teachers to think about change such as rearranging the timetable so that there is a slot one afternoon after the students have left.
- Ask teachers to take photos or videos of each other and share them to illustrate different approaches in action.
- To ensure that all students have opportunities to participate in classroom activities, teachers need to know their students, what they know and how they know it. This offers ideas for ways to make learning opportunities available to all students.
- Engage students of all ages in pair to enable them to learn from each other in all subjects.

Implementation:

'Progress is impossible without change and those who cannot change their minds cannot change anything.'

- George Bernard Shaw

The best plans are meaningless if you don't try them. The beginning of the SAGES was full of doubts and confusion whether the school of Excellence will be a success or not. The fear was there because the scheme was launched just before the spread of Corona. The admission process started in the midst of Corona lock-down. High quality implementation of educational approaches can have a significant impact on improving student's outcomes. After the selection of students from classes 1 to 12, the teachers were waiting for the school to start. A lot of construction work was also going on side by side. But since the Corona had spread in a very dangerous form and there was no hope of getting rid of it soon, orders were released from the School Education Department for online classes in the period of lock-down through "Padhai Tuhar Dwar" scheme, a new initiative of the government of Chhattisgarh.

Now the teachers had the option to bestow training to understudies from everywhere in the state and not simply from a solitary school. The students had the opportunity to use their time in a superior manner by learning new subjects in a fascinating way. The significant advantages were that teaching and learning was to happen at home, 100% achievement, video exercises, TLM, school work, intelligent online study hall, fun instructive games and exercises.

Now it was clear to the teachers that everyone can access education no matter the location and with the help of online classes they would be able to eliminate borders and barriers, both social and physical. Now they would be able to provide high-quality education and that too from their own place and time. Now the teachers had an efficient way to deliver lessons to students.

Time table was constructed covering all the subjects, the curricular and co-curricular activities for the Primary, Middle and Higher Sections. Our DEO office with the help of SECL, Bilaspur provided us well equipped laboratories and library and specially smart classrooms equipped with CCTV cameras and speakers, whiteboards, green boards in all the classrooms and interactive digital panels in 5 classrooms with the Wi-Fi facilities in the whole school campus. The Interactive Board is a tool that allows multiple students and teachers to engage in a collaborative and sharing experience using a touch screen. It even allows the integration of devices like laptops, tablets and smart phones. The mathematics teachers specially the higher section are using it to draw their diagrams and images see it mirrored on the display in real time. This is very interesting for the students and it reduces down time. In the same way science teachers are also using it for their classes. Since it has Google, YouTube and other apps it's easy for the teachers to use and being able to view and annotate on a large screen that everyone in the room can see is a useful ability. The Primary teachers are using it to share rhymes and cartoons and movies with their little kids who enjoy their classes on the big screen. All the documents can be saved as jpeg, pdf or other forms to emailed and shared with the students and staff. These equipments are utilized in the education space to enhance the learning process. Books related to the subjects are also being issued by the librarian specially to the students who cannot afford to purchase them.

Teachers of Middle and Primary sections are using "Augmented learning technology" to make lessons more engaging for their students and to ensure that students are more likely to grasp the subject matter. Specially science teachers are turning their classrooms into virtual haven of augmented learning activities. Monthly tests were held regularly to measure learning progress and achievement and to evaluate the effectiveness of the teaching of various subjects by the teachers. Teachers of Primary and Middle school are regularly using teaching learning materials (TLMs) for a better interpretation and appreciation of the concepts, contents as well as the subject matter. It increases knowledge of learners, arouses interest and enriches their imagination and thinking power. It also enables them to learn faster and remember longer. Now as the students are coming regularly to school, they are using the well-equipped computer labs also.

Education is incomplete without the co-curricular and extra-curricular activities. Besides the mental development emotional, physical, psychological, spiritual, social and cultural development is essential to inculcate the various human values. For the all-round development of the students all these activities are necessary to be conducted in the schools. The various activities conducted online because of Corona by our school during this scholastic session are –

- Painting and drawing competitions for Primary, Middle and Higher section on the occasion of Independence Day to help the students develop their abilities and skills to draw and paint and also to inculcate the spirit of patriotism.

- Dance competitions were held for the Primary and Middle sections because it is not only as act of entertainment but it is part of humanity and human culture. Dance is not merely a skill but also an art. Various dance forms show different gestures, grace and values.
- Writing and speech competition are the two important productive skills organized on the occasion of Gandhi Jayanti. The main aim was to develop language skills as well as the intention to develop respect for the national leaders and also help the students to acknowledge their services for the betterment of our nation.
- Fancy dress and card making competitions were held for the Primary students to celebrate Dussehra and Diwali and Christmas. This helped the students to learn to respect various religions and become familiar with various dresses.
- Art and craft competitions were organized to make the students to use waste things and transform them into something creative and useful, which can be used for the purpose of education and also for decoration. The students also learned to spend their free time in a constructive way.
- Describing competition held for the Primary students helped them to observe attentively, think logically and speak sensibly.
- Flower making and clay modelling was organized for the Primary students to develop their psycho-kinetic skills and involve them in constructive work. They also learned to respect the work of these artists who use it as their livelihood.
- Notice board decoration and slogan writing competition was held for all the students to develop their writing skills. A special mention of the sports facilities. Once the things get normal after the Corona is under control the students will be able to use all the sports equipments available in the school. In this session, the Government has issued orders not to organize any sports activity. Maintaining social distancing, certain activities were done by the Scouts and Guides team developing the quality of team work and leadership in the students. They also learned to help each other.

Challenges:

'Challenges are great opportunities in disguise. Each challenge you accept opens a new door to your success.'

- Priyanka B. Chakrabary

The main challenge is the beginning of the new school in which there was designing and planning the aims and objectives, the vision, the mission, the school calendar, the rules and regulations, ways of working and setting the culture. But in teaching and learning process, the main challenge was to identify what is keeping students from learning today. Students living at or below poverty level tend to have the highest drop out.

In spite of the facility of Mid-day meal the children specially from Primary and Middle section leave the school and are less likely to perform at their full academic potential. Students from poor families cannot afford mobile and wifi facilities or Internet data pack. Because of this reason they are not regular in their online classes. The student's love of technology also tends to distract him from his school work. Because of the fear of corona many parents are not willing to send their children to school. At present it is a big challenge to keep the students from 9 to 12 safe from Corona. The availability of proper sized classrooms and the number of classrooms must be given importance. The school will face this challenge once all the students are allowed to attend their classes.

Another important challenge is least amount of participation by the students and sometimes teachers also in the classes due to low level of proficiency in English. Students coming from poor families don't have the environment of spoken English and also, they don't get any help from their parents in their studies. Even the teachers faced lack of effective training regarding the use of technology.

Outcomes:

With a clear vision, mission, aims and objectives, curriculum there is an effective teaching and learning going on. Having the potential to create a new way of relating to parents. With regular parent/teacher meetings the teachers regularly convey the progress of the wards to their parents who are taking interest in their children.

The use of technology has created curiosity, eagerness and interest in the students regarding their studies. At the young age children don't get bother about mistakes in front of others. Learning at the young age gives you enough time to learn and correct your mistakes and so this school will play a key role in the successful career of the students who have taken admission in class 1. Exposure to English regularly will build their confidence and fluency. Now no children will be deprived of education of his or her choice only because of their parent's inability to pay the high fees.

Conclusions:

"A positive learning climate in a school for young children is a composite of many things. It is an attitude that respects children. It is a place where children receive guidance and encouragement from the responsible adults around them. It is an environment where children can experiment and try out new ideas without fear or failure. It is an atmosphere that builds children's self-confidence so they dare to take risks. It is an environment that nurtures a love of learning."

- Hillman C. (1989)

SAGES, Tarbahar, Bilaspur is working towards the creation of the above mentioned environment and atmosphere.

4. Reference

Hillman, C. (1989), U.S. early childhood educator, Creating a learning climate for the Early Childhood Years, Fastback Series

TI-AIE: Transforming teaching-learning process: leading improvements in teaching and learning in the secondary school, viewed on 23 February 2021,

<https://www.open.edu/openlearncreate/mod/oucontent/view.php?id=57975&printable=1>

Verma, N (2020), viewed on 22 February 2021,
<https://currentaffairs.bankexamstoday.com/2020/11/swami-atmanand-government-english.html?m=1>

5. Attachments

Swami Vivekananda Government Excellent English Medium School, Jagdalpur
Principal - Mrs. Manisha Khatri
Email- manisha7674@gmail.com, Mobile-9407641198

Transforming teaching learning process

Swami Vivekananda Govt. Excellent English Medium School, Jagdalpur established in the year 2020 under the State Government's ambitious project Swami Atmanand Excellent English Medium School Scheme. It is the dream project of our honorable chief minister Shri Bhupesh Baghel and this dream has been turned into reality by our Principal Secretary Dr Alok Shukla. The mission of this project is to impart good quality English education to the downtrodden and economically weaker sections of the society. The original Vivekananda Govt. School was established in the year 1905. It is one of the oldest schools in Jagdalpur with a successful history.

This is the first year of its establishment and the school received 1160 applications for admissions in classes from 1st to 12th. All the applications were sorted out and the lottery was drawn for all the classes since there were huge numbers of students seeking admission. At present there are 496 students studying in this academic session 2020 – 21. There are total 21 academic staff appointed in the school.

Introduction

During the COVID – 19 pandemic when all the lives were affected badly, the students of the school were mostly affected because the schools were closed for the students over a long period of time. But, the innovative project titled 'Padhai Tuhar Dwaar' was introduced by the Chhattisgarh state government, which brought a significant change in the life of students during the COVID phase. The students were not only able to attend the classes regularly from home but also were acquiring valuable knowledge of their subjects and regular academics.

In addition to “Padhai Tuhar Dwaar”, a new artificial intelligence technology called “Augmented Reality” was also introduced by the Principal and teachers of Swami Vivekananda Govt. Excellent English Medium School, Jagdalpur for the students. Through this technology application visual 3D representation of any object or form was possible during the online classes. Our school was the first in the district to implement a new technology for the teaching – learning process.

Objectives

The main objective of this transforming teaching learning process through augmented reality learning was to provide quality education to the students even when they are away from the school and to create an enthusiasm in teaching – learning process. Through this technology the students were able to see 3D visual representation of many things like human body, solar system, mathematical shapes, geographical visualization which they never imagined in their life during the offline classes. 360 degree virtual reality visualization left an everlasting impact in the minds of the students to understanding the concept.

Planning

There is a huge potential of combining Augmented Reality and Smart Phones for Online Education and some of it has already been realized into applications eg. Interact with 3D model human organs, perform a virtual practice, combine different chemical elements to see how they react or turn mathematical concepts into 3D models for easier understanding.

Implementation

Smt. Manisha Khatri, Principal informed the staff about this innovative idea and instructed staff to implement the technology in the field of teaching in order to create joyful learning – teaching process specially when the schools are closed for the students. The teachers as per their subjects took the help of this technology and successfully imparted 3D visualization augmented reality for the students in their regular teaching methods. Using augmented reality in the classroom can turn an ordinary class into an engaging experience. As a result, classes become more interactive.

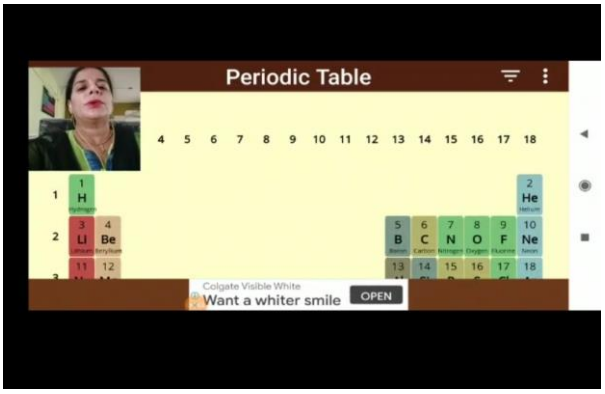

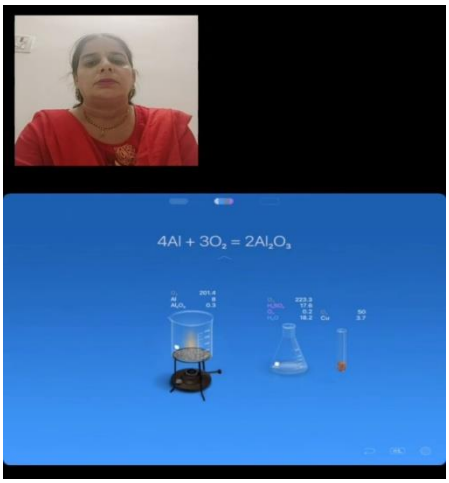

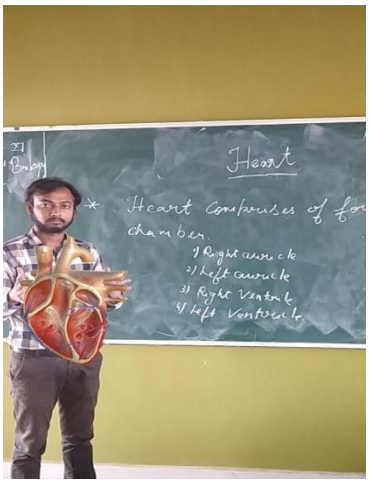

Challenges

When the admission process in our English Medium School started, we did not anticipate that we will be receiving so many applications for admission in school. We were uncertain about the trust and faith that the parents will admit their children in our school. But, as the admission process started we received a lot of applications for admissions. During online classes, we faced difficulties in getting touch with the students for proper connectivity. There were many students who belonged to economically weaker sections of society and their parents couldn't afford highly equipped phones suitable for online classes. Many students faced difficulty in connecting to online classes due to the network unavailability in the remote areas. Therefore, the teachers of our school started making interactive videos and sent through WhatsApp in order to keep the students engaged in studies and to come out of the monotonicity of their daily life during COVID.

Outcomes

The outcome of this teaching learning process was quite good. The students were able to attend the classes as per their convenience and regularly sent their homework and activities to the teachers which were assigned to them on a daily basis. This not only created a sense of enthusiasm in learning among the students but also helped in spending their time more efficiently than before. The officials and parents also applauded for this innovative idea.

Conclusion

The transformation in teaching learning process with augmented reality was quite effective and successful. Through this the educators were able to improve learning outcomes through increased engagement and interactivity. It helped in enhancing learning of abilities like problem – solving, collaboration and creating better students for the future. This idea was also good for traditional pedagogy focused on technical knowledge and proficiencies.

References

Shri. Satyaraj Iyer Sir, State co-ordinator of PTD (Padhai Tuhar Dwaar) explained about “Augmented Reality” in state level webinar.

Attachments

YouTube links of online classes through Augmented Reality in transforming teaching learning process.

- https://youtu.be/iAG9g6MQX6Q
- https://youtu.be/KcSAHvZDuoo
- https://youtu.be/ZSGE7dpPZvE
- https://youtu.be/uLGnfUkyR10

SWAMI ATMANAND GOVERNMENT ENGLISH SCHOOL (SAGES)
RAIGARH (C.G.)

Principal - Mrs. Vandana Rohilla
Email- Vandanarajputr@gmail.com, Mobile-9977772769

SCHOOL INFORMATION

Swami Atmanand Govt. Eng. Med. School, Natwar School Parisar Raigarh was started on 30th May, 2020. It was established under the Swami Atmanand Govt English Medium school Scheme initiated by Govt of Chhattisgarh which is a dream visionary project of Hon'ble CM Sir, Shri Bhupesh Baghel, & School Education Dept. of the state. Our school is situated at the heart of the city with prosperous infrastructural amenities. The state government formed a society to run the school. President of the society is Hon'ble Collector of Raigarh Shri Bhim Singh, CEO mam Miss Richa Prakash Choudhary, Commissioner Municipal Corporation Shri Ashutosh Pandey, Asst. Tribal Commissioner Shri H.R. Chauhan, District Education officer Shri R.P Aditya and District Coordinator Rajiv Gandhi Shiksha Mission Shri Ramesh Dewangan are the members who help & guide for the smooth functioning of school.

There are 34 staff members in the school which consist of 26 teaching & 8 non-teaching staffs recruited on deputation & contractual basis. The recruitment process was completed in the month of July 2020 & was earliest amongst all the English medium schools. We are going to be provided with well-equipped buildings & laboratory, library etc.

We had conducted Baseline Test for the students from Class 1st to Class 8th so that we can be able to know the pre knowledge (level & learning Outcomes) & skills of the students admitted to our school.

Online classes from class 1st to 12th were started from 27th of July 2020 and completed over 4500 online classes till date which benefitted approximately over 1.2lacs students. It is also highest number amongst the district and English medium schools in Chhattisgarh as well.

During lockdown period, we have conducted co-scholastic activities on Saturday as awareness program, activities such as drawing, Fancy dress, poster-making, slogan writing were organized by the middle & Primary Section.

Important days were celebrated virtually like Independence Day, Teachers day on 7th of September, Hindi Diwas on 14th September and Webinar on social challenges versus Gandhi Jivan Darshan o 2nd October (Special guest Mrs. Jessy Philip, Rehab. Foundation Raigarh), Corona Awareness Program: Causes, Symptoms, Prevention & Treatment(Special Guest Dr.Laxmaneshwar Soni MD, Asst professor, Medical College Raigarh on 4th October),Washing Technique & Advantages on 17th October, National Unity Day on 31st October, State Foundation Day on 1st November, Diwali Celebration(13th November , Children's day Celebration(15th November),National Constitution Day (26th November),International day of disabled person(3rd December),National Mathematics day (22nd December),Making Best out of waste (24th December),national Youth Day (12th January) Parakram divas 125th birth anniversary of Netaji Subhash Chandra Bose(23rd January),National Voter's Day(25th

January),Republic Day Celebration(26th January),Mother Language day(21st February) ,National Science day(28th February).

A Visit was Organized by the District Administration to observe the infrastructure of O.P.Jindal School, Raigarh (C.G.) on 23rd September 2020.Teachers were divided into three separate batches.

A Virtual training program was conducted by the OPJS Administration in two batches. Batch-1(training from 01-10-20 to 05-10-20) & Batch-2 (training from 06-10-20 to 10-10-2020).The topics included in training program Understanding learners styles to maximize learning outcomes, making science class exciting for students, innovative pedagogy in science ,Experiential learning, Designing an inter disciplinary unit in social science, teaching strategies/methodology in teaching English, Integration of ICT in the teaching of English, Skill based teaching part-II, methodologies in mathematics , Practical skills & projects in Science , Effective questioning techniques in Social Sciences.

PAHAL Test & Google forms Test are conducted every month to make the teaching-learning process more effective. Feedback by the parents is also taken. Parent-Teacher meeting are also conducted on regular basis.

BEST PRACTICES

a) AUGMENTED REALITY (AR)

b) TEACHING LEARNING MATERIAL (TLM)

➢ AUGMENTED REALITY (AR)

Augmented reality simulates artificial objects in the real environment. A combination of a real scene viewed by a user and a virtual scene is generated by a computer that augments the scene with additional information. Augmented reality is a technology that works on computer vision, based recognition, algorithms to augment sound, video, graphics and other censor, based inputs to real world objects using the camera of your device.

The objective of augmented reality in education is to build environment with a high degree of participation and interactivity in which the student is able to design, build, modify, experiment and become much more actively involved in the learning process.

The most popular application for augmented reality in education is the use of the AR apps (ARLOOPA) directly in the classroom. They can help the teacher explain a subject, provide a visual representation of the material, and help students test out their knowledge in practice.

A simple augmented reality use, case is a user captures the image of a real-world object and the underlying platform detects a marker which triggers it to add a virtual object on the top of the real-world image and displays on your camera screen.

The augmented reality is used in the classroom to use location, based AR. We use ARLOOPA app and tap on the scanner icon to open the scanner. Then we hold the device camera up on the marker and waited till it recognized the marker. We saw a red loading circle with percentages. Once it reaches 100%, the virtual image was displayed.

CHALLENGES –

- Lack of necessary training – The teachers' struggle putting these, technology into practice as their background training doesn't provide the necessary skills.
- Frequent technical problems.
- Usability issues.
- In sufficient research on the impact of using mobile AR in education.
- Dependence on hardware using augmented reality in the classroom requires a certain resource base. For example – Some students do not have supporting AR applications.
- Content Portability issues – The AR app we build needs to work equally well on all platform and devices. However, it is practically impossible to provide the same quality of AR content on any device.

OUTCOMES –

- Accessible learning materials – anytime, anywhere. Augmented reality has the potential to replace paper textbooks, physical models, posters, printed manuals. It offers portable and less expensive learning materials. As a result, education becomes more accessible and mobile.
- No special equipment is required. AR technologies are immediately available for use for the majority of the target audience.
- Improved collaboration capabilities. Augmented reality apps offer vast opportunities to diversify and shake up boring classes. Interactive lessons, where all students are involved in the learning process at the same time, help improve teamwork skills.
- A faster and more effective learning process. AR in education helps students achieve better results through visualization and full immersion in the subject matter. A picture is worth a thousand words, right? So, instead of reading theory about something, students can see it with their own eyes, in action.
- Universally applicable to any level of education and training. Be it learning games for kindergarten. AR isn't limited to only one-use case or field of application.
- Attention, satisfaction and confidence factors of motivation increased during online classes and students are interested in these activities. CONCLUSION - To add information and meaning to a real object or place augmented reality does not create a simulation of reality, but it augments the reality or mix the Virtual with Real. This helps the primary section students to learn effectively the topics. Augmented reality in education helps students achieve better results through visualization and learning becomes easier for them. REFERENCES – Google, ARLOOPA.com, Android app, youtube.com, augmented reality flash mob., Azuma, R. etc.
- TEACHING LEARNING MATERIAL (TLM) TLM is a commonly used acronym that stands for "teaching learning materials." Broadly, the term refers to a spectrum of educational materials that teachers use in the classroom to support specific learning objectives, as set out in lesson plans. The role of TLM's in the classroom is to make learning real practical and fun for children.

OBJECTIVES – • Teaching aids make every student an active participant in the classroom.

• Teaching aids help students to relate to what is being taught to real-life situations.

• Teaching aids provide reinforcement for better learning.

• They make the learning permanent among the students.

They develop the perception of the students towards the content. Knowing the type of TLM's, the teacher, length of lesson and method to use to deliver the lesson effectively will make it easy for the teacher to decide the type and size of TLM we need to design. To develop Teaching Learning Materials the teacher should choose the topic, make a plan and identify the resources available. 'ACTIVITY BASED LEARNING' – 'Learning through Activity' and 'Active Learning' means the process the learner use to acquire experiences by being involved in a activity. For example – the student uses the knowledge of addition and subtraction to check the bills of the grocery shop, its more of mental activity than physical. The students were introduced the concept of monocotyledons (plans having only one cotyledon at the time of germination). Several common materials like flashcards on different themes, number and alphabet cards and model made of paper, clay, thermocol, charts, graphs, pictures, toys were prepared by teachers and students in our school. The students were involved in planning and preparing the materials. Their involvement was crucial in these activities because they love to be active participants in such creative activities, through these activities the students learn the quality of leadership which will help them in their future. 'USE OF TLM IN LANGUAGE LEARNING' Audio aids – Aids that facilitate learning by using the sense of hearing are audio aids. These aids help a teacher especially in language teaching. Textbook is also one of the most common teaching learning materials used by the language teachers in teaching learning process. Teaching Learning Materials make the teaching learning process interesting. Green-board, charts, maps, flashcards, PPT, video clips, documentaries, audio tapes, demonstration etc. are used as TLM.

CHALLENGES –

- Lack of electricity supply to operate visual aids.
- Network problems while conducting online classes.
- During online teaching using of TLM there is a lack of motivation in online learners.

OUTCOMES –

• The TLMs used to design lessons that allow for more thorough absorption of knowledge and improved learning outcomes.

• It engages students in Webquests and other inquire based learning that empowers students to research independently, construct questions, and understanding a subject or concept.

• Application of theoretical knowledge into practical applications.

• Facilitate the concept formation and attainment among children.

• TLM motivates the learners. It helps for longer retention of information in students.

CONCLUSION - The audio-visual aids are important tools for teaching learning process. It helps the teacher to present the lesson effectively and students learn and retain the concept better for a longer duration. The TLMs helps to remove abstract concepts through visual presentation.

REFERENCES – Youtube.com, google, chrome, diksha app, chalklit, google classroom, telegram, facebook, etc.